



चौबीसवाँ अंक
वर्ष-2023

कुरिंजि

कार्यालय गृह पत्रिका



वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)

तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

तेनामपेट, चेन्नई-18



हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर गृह पत्रिका कुर्रिंजि के 23वें अंक का विमोचन करते हुए तीनों कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख



वर्ष 2021-22 के लिए एएमजी-II अनुभाग की ओर से राजभाषा हिंदी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन का रोलिंग शील्ड प्राप्त करते हुए श्री जे.मोहम्मद अशरफ, व.उपमहालेखकर/ एएमजी-II

कुरिंजि परिवार

मुख्य संरक्षक	को.प. आनंद प्रधान महालेखाकार
मार्गदर्शक	जी.राजेन्द्रन वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
सलाहकार	ई. रामनाथ वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
संपादक मंडल	वी.चित्रा, हिंदी अधिकारी डी पी लेखा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक अभिषेक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक मोहन प्रकाश, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक जितेन्द्र कुमार जायसवाल, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अंक	चौबीसवाँ
प्रकाशक	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा
टिप्पणी	संपादक मंडल को पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त रचनाकारों के विचार से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

रचनाकार स्वयं अपनी रचनाओं की मौलिकता के लिए उत्तरदायी हैं।

आपके अभिमत



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर



संख्या : प्रशा./राजभाषा/10-4/पत्रिका/2015/105

दिनांक : 13/12/2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन,
361, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 600018

विषय - हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजी' के प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'कुरिंजी' के 23वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च दर्जे के हैं। विशेषकर श्री पवन कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक द्वारा रचित कहानी 'सहारा ने अंतरात्मा को छु लिया'। इस कहानी में वर्तमान में मानव जाति में रिश्तों में संवेदानाओं की अपार कमी को मार्मिक रूप से दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में निहित अन्य लेख जैसे श्री मोहन प्रकाश द्वारा रचित तमिलनाडु राज्य की सैर, श्री अभिषेक, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा रचित नए भारत की कल्पना, श्री अविनाश कुंदन, लेखापरीक्षक द्वारा रचित एलमिरी हिल्स के यात्रा बेहद ही रोचक यात्रा वृत्तान्त है। किसी विशेष लेख के बारे में विचार देना अत्यंत ही दुष्कर है, क्योंकि पत्रिका में निहित सभी लेख विचारात्मक, प्रेरक एवं ज्ञान से ओत प्रोत हैं। सच तो ये है, कि ये पत्रिका गागर में सागर भरने जैसा है।

पत्रिका के उत्तम संपादन, संकलन एवं साज-सज्जा के लिए पुनः संपादक मंडल एवं सभी सम्बंधित कर्मियों को बधाई। आशा करते हैं कि आपकी पत्रिका निरंतर ऐसे ही जानवर्धक, रोचक एवं प्रेरक रचनाओं का सार होगा।

शुभकामना सहित अगले अंक के प्रतीक्षा में।

HS/223
15/12/22

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
13.12.22



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी.,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-27002174, फैक्स 0172-2703110
क्रमांक:- हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/3-10/2022-23/544
दिनांक:- 21-11-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, लेखापरीक्षा भवन, 361, अन्ना सालई,
तेनामपेट, चेन्नई - 600018

विषय:- विभागीय पत्रिका "कुरिंजी" के तेइसवें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "कुरिंजी" का तेइसवाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री हेमंत प्रिय टॉक की "कविता", श्री मोहन प्रकाश की "तमिलनाडु राज्य की सैर", श्रीमती राधा वी. की "मेरे प्यारे पिताजी" एवं सुश्री वी. चित्रा की "सफल जीवन का रहस्य" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

HS 202
30/11/22

भवदीय

हिंदी अधिकारी

कुरिंजी 2023



भारतीय लेखापरीक्षा आर लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)



स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23

दिनांक-29.11.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखा परीक्षा भवन 361 अन्ना सलाई तेनाम पेट,
चेन्नई-600018
ईमेल- agautamilnadu2@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह ई-पत्रिका "कुरिजि" के 23वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका "कुरिजि" का 23वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	मोहन प्रकाश	तमिलनाडु राज्य की सैर
2.	पवन कुमार	सहारा
3.	संजीव कुमार	रसीदी टिकट
4.	हेमंत प्रिय टाक	कविता

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarjecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.pda@gmail.com



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण

एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,

ए.जे.सी. ब्रोस रोड 234/4, कोलकाता- 700020

फोन: 033-2289/4111/12/13 फैक्स: 033-2289-4060

ई मेल:- bresdkolkata@cag.gov.in

ओम्बहिसारो सत्यमिथा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/412

25 NOV 2022
दिनांक:-25.11.2022

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन,
अण्णा सालई, तेनामपेट,
चेन्नई- 600 018

विषय:- हिंदी पत्रिका "कुरिजि" के 23वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "कुरिजि" के 23वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री मोहन प्रकाश जी का यात्रावृत्त 'तमिलनाडु राज्य की सैर', श्री राम जी का आलेख 'अग्निपथ योजना', श्रीमती वी.एम.विंदु जी का आलेख 'योग', श्रीमती जी. संगीता जी का आलेख 'आई.एन.एस. विक्रान्त', श्री संतोष चौधरी जी की कविता 'दो दिन ऐवामिरी का दूर' और श्रीमती राधा वी. जी की कविता 'मेरे प्यारे पिताजी' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कुरिजि" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीया,
हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी



दूरभाष/Telephone- 2223251,
2225766, 2224812
फैक्स/Fax- 0612-2225977

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & F), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./ले. व हक. 757/पत्रिका प्रतिभाव/22-23-123
दिनांक 19/12/2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई.

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के 23वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित उक्त विषयक हिन्दी गृह पत्रिका 'कुरिंजि' के 23वें अंक की ई-प्रति ईमेल (दिनांक-15.11.2022) के माध्यम से प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। हिन्दीतर भाषी राज्य में अस्थित कार्यालय के प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'कुरिंजि' के 23वें अंक की इस ई-संस्करण न केवल डिजिटलीकरण की दिशा में स्वयं में एक विकास क्रांति है अपितु राजभाषा हिन्दी के विकास में योगदान स्वरूप है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं बल्कि समाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में पेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी))



HS/225
21-12-22

स्वीस कोट



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.



सं.हिन्दी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/126
दिनांक: 07-12-2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
चेन्नई -600 018

विषय: हिन्दी गृह-पत्रिका "कुरिंजि" के 23 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह-पत्रिका "कुरिंजि" के 23 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर मंदिर का चित्र और अंतिम पृष्ठ पर तिरंगे की छटा में फूलों का चित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं और उसे आकर्षक बनाते हैं। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी)

HS/217
13-12-2022

अनुक्रमणिका

क्र.स.	रचना के नाम	रचनाकार सुश्री/श्री/श्रीमती	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का सन्देश	प्रधान महालेखाकार	
2.	संपादक की कलम से	हिंदी अधिकारी	
3.	आजादी का अमृत महोत्सव	अरविन्द कुमार	1
4.	किन्नर रानी चेन्नम्मा- कर्नाटक की पहली महिला स्वतंत्र सेनानी	वी .राधा	3
5.	चैबकरामन पिल्लै- स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने जय हिन्द का नारा दिया	वी.चित्रा	6
6.	तमिल संस्कृति की एक झलक	मोहन प्रकाश	11
7.	मणिपुर हिंसा	जी.संगीता	15
8.	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान	डी पी लेखा	17
9.	आजादी का अमृत महोत्सव	आर. श्री विद्या	20
10.	नये भारत, नयी उड़ान "मिशन चन्द्रयान"	जितेन्द्र कुमार जायसवाल	22
11.	जी-20 शिखर सम्मेलन और भारत	श्रीराम	25
12.	जीवन एक किताब	आर. श्रीनिवास प्रभु	30
13.	इंतजार	आर. श्रीनिवास प्रभु	32
14.	द्रौपदी संवाद	अविनाश कुंदन	33
15.	जीवन का रहस्य	वी.राधा	35
16.	हमने वक्त को बदलते देखा है	संजीव कुमार गिरी	36

17.	अति की चाह	जितेन्द्र कुमार जायसवाल	38
18.	संघर्ष ही जीवन है	पवन कुमार	39
19.	टिफिन का डिब्बा	आर. श्रीविद्या	41
20.	मानवता	आर. श्रीविद्या	43
21.	चुटकुले	वी.राधा	45
22.	पहेलियाँ	वी.राधा	47
23.	आधुनिक युग मे विचलित मानव	गिरीश कुमार	49
24.	स्त्री उत्थान: समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण कदम	डी. साईश्री	53
25.	ग्लोबल वार्मिंग	वी.एम.बिंदु	54
26.	भारत- मधुमेह की राजधानी	वी. सविता	55
27.	घमण्ड- प्रेरक प्रसंग	संजीव कुमार गिरी	56
28.	दस छोटी-छोटी आदतें	दीपक कुमार	58
29.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान	नाहिन अब्दुल सत्तार	60
30.	एक युग का अंत होने जा रहा है	वी. रूक्मणि	62
31.	प्रकृति	एस. सुभाष चंद्र	63



प्रधान महालेखाकार का संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका ' कुरिंजि' अपने प्रकाशन के 24 वें अंक में प्रवेश कर रही है। इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही गृह-पत्रिका "कुरिंजि" का उद्देश्य कर्मिकों सहित सभी पाठकों के मन में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव को प्रोत्साहन देना है। हिंदी भाषा हमारे देश की सामासिक संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। अतः हिंदी भाषा के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करना हम सभी का राष्ट्रीय दायित्व है।

हिंदी पत्रिका' कार्यालय स्तर पर विचारों की अभिव्यक्ति का समुचित अवसर प्रदान करता है। कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका प्रकाशन हेतु रचनायें प्रस्तुत करने में जो उत्साह दर्शाया गया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है।

मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ, क्योंकि उनके सामूहिक प्रयासों से कार्यालय में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग होता है और सभी लेखकों की प्रतिभा और राजभाषा हिन्दी के प्रति उनका समर्पण स्पष्ट होता है।

आशा करता हूँ भविष्य में भी कार्यालय के सभी कर्मचारी पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं अपने कार्य से भी संबंधित लेख आदि लिखकर पत्रिका को उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का प्रयास एवं सृजनात्मकता के नए आयाम स्थापित करते रहेंगे ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

(को.प.आनंद)

प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा - II)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई



संपादक की कलम से

यह अत्यंत गौरव का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में सहयोग करते हुए। वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "कुरिंजि" के चौबीसवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिंदी अत्यंत रुचिकर माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक पहुंचती है जिसके फलस्वरूप वे हिंदी से स्वयं को जोड़ने का प्रयास करते हैं। कार्यालय में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित हो सकें। हिंदी में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करने से इसके प्रयोग के क्षेत्र में वृद्धि होगी। आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक साधनों की सहायता से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सरल बनाया गया है।

कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी को उचित रूप से विकसित करने के लिए पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ समयानुसार विभिन्न आयोजन किया जाना चाहिए। एक साथ मिलकर संयुक्त प्रयास करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास के लिए किए गए कार्यों से उचित परिणाम प्राप्त होंगे और राजभाषा को उचित स्थान प्रदान करने में सहयोग करेंगे। पत्रिका के चौबीसवें अंक में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करती हूँ कि पत्रिका "कुरिंजि" का चौबीसवाँ अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करेगा।

वी चित्रा
हिंदी अधिकारी

आजादी का अमृत महोत्सव



श्री अरविंद कुमार
लेखापरीक्षक

आजादी का अमृत महोत्सव बड़े ही जोर-शोर से पूरे भारत देश में मनाया जा रहा है। भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवाँ और जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। इसके अलावा भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है। 15 अगस्त 1947 को भारत ने अपने स्वतंत्रता सेनानियों की बदौलत अंग्रेजों से आजादी हासिल की थी। इस आजादी को कुछ नए ढंग से मनाते हुए लोगों के देश के प्रति भक्ति भावना को तीव्र करने के लिए 12 मार्च 2021 को गुजरात के साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से इसकी शुरुआत की गई जिसे 15 अगस्त 2023 तक मनाया गया ।

आजादी का अमृत महोत्सव का उद्देश्य:

यह सबसे महत्वपूर्ण है कि देश आजादी का अमृत महोत्सव (भारतीय स्वतंत्रता के 75 वर्ष की स्मृति में) मना रहा है। अमृत महोत्सव मनाने के पीछे क्या उद्देश्य है इसे सूचीबद्ध किया गया है।

- * आजादी पाने के लिए न जाने कितने स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने खून की आहुतियां दी हैं। उनके बलिदान को याद करना ।
- * हर भारतवासी के मन में देश भक्ति की भावना जगाना और आजादी का महत्व समझाना ।
- * जनता में देश के प्रति सम्मान और आदर के भाव को बढ़ाना ।
- * इस महोत्सव के दौरान सभी सरकारी भवन और घरों पर तिरंगा फहराया जाना ताकि इसका महत्व लोगों तक पहुंचाया जा सके ।

आजादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2023 तक मनाया गया । भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव में व्यापक भागीदारी और जागरूकता सुनिश्चित करने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने “जनभागीदारी और जन आंदोलन” की समग्र भावना के तहत महोत्सव मनाने के लिए अभिनव कार्यक्रमों की एक श्रृंखला तैयार की है। यह देशवासियों को बलिदान और भारतीय गौरव और इतिहास के बारे में याद दिलाता है। मीडिया इकाईयों ने भी विभिन्न तरीकों और माध्यमों से देश भर में सक्रियात्मक कार्यक्रमों की श्रृंखला की एक रूप रेखा तैयार की है।

सक्रियात्मक कार्यक्रम निर्माण के प्रमुख पहलुओं में से एक स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक सहित स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद करना है। आकाशवाणी 16 अगस्त 2021 से राष्ट्रीय और साथ ही क्षेत्रीय चैनलों पर एक अनूठा अभिनव कार्यक्रम, “आजादी का सफर आकाशवाणी के साथ” शुरू किया है ।

आज की तेजी से बदलती दुनिया और कठिन प्रतिस्पर्धी से भरे दिन-प्रतिदिन के जीवन में, युवाओं को हमारी समृद्ध विरासत और अतीत को याद करने के लिए मुश्किल से ही समय मिल पाता है। भारत में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई एक अनूठी कथा का गठन करती है, जो हिंसा से प्रभावित नहीं होती है। बल्कि एक कथा जो इस लंबे चौड़े उपमहाद्वीप में वीरता, बहादुरी, सत्याग्रह, समर्पण और बलिदान की विविध कहानियों से भरी है। ये कहानियाँ समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं की रचना करती हैं। इस प्रकार गुमनाम नायकों और कम-ज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को परिभाषित करने की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी वे ऐसे नेता हो सकते हैं जिनके आदर्श भारतीय मूल्यों को चित्रित करते हैं।

गुमनाम नायक पर खंड, हमारे स्वतंत्रता संग्राम के भूले हुए नायकों को याद करने का एक प्रयास है । लेकिन नई पीढ़ी के लिए अज्ञात अतीत की धुंधली स्मृतियों के रूप में पड़ी कहानियों को फिर से रचने और सामने लाने का उद्देश्य – आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन का माध्यम बनेगा। भारत 2.0 केवल विकास के किसी एक विशेष प्रतिमान में भारत की भावना को बढ़ावा देने के बारे में नहीं है। यह जीवन के सभी क्षेत्रों को शामिल करता है, सबसे बढ़कर हमारे दिल और आत्माओं को समृद्ध करता है।



कित्तूर रानी चेन्नम्मा – कर्नाटक की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी



श्रीमती वी.राधा
सहायक पर्यवेक्षक

आज़ादी का अमृत महोत्सव के सिलसिले में, मैं कर्नाटक की पहली महिला नायिका के जीवन के बारे में लिखना चाहूँगी। अंग्रेजों के खिलाफ अकेली लड़नेवाली यह महिला, कर्नाटक के कित्तूर राज्य की रानी चेन्नम्मा थी। शौर्य और साहस की प्रतीक रानी चेन्नम्मा जिसने न केवल अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये लेकिन कई महिलाओं को ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया।



रानी चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर 1778 को कर्नाटक की वर्तमान बेलगावी जिले के एक छोटे से गाँव काकती में हुआ था। उनके पिता का नाम धुलप्पा देसाई और माता का नाम पद्मावती था। वह लिंगायत समुदाय से थी। धुलप्पा देसाई बड़े सरदार थे। उन्होंने चेन्नम्मा को अलग – अलग युद्ध कौशल में पारंगत किया था। चेन्नम्मा कम उम्र से ही घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीर चलाने में माहिर थी। सिर्फ युद्धकला में ही नहीं बल्कि उन्होंने कन्नड़, संस्कृत, उर्दू और मराठी भाषाओं में निपुणता प्राप्त कर ली थी।

रानी चेन्नम्मा की बहादुरी और युद्ध कौशल के कारण ही उनकी शादी राजा मल्लसर्जा देसाई से हुई जब रानी चेन्नम्मा की उम्र महज 15 साल थी। महाराजा मल्लसर्जा की दो रानियाँ थी। बड़ी रुद्रम्मा और छोटी चेन्नम्मा। कुछ समय सुख से बीता लेकिन उसके बाद चेन्नम्मा पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

राजा मल्लासर्जा की मृत्यु 1816 में हो गई। इसके बाद रानी चेन्नम्मा के इकलौते बेटे की भी मृत्यु हो गयी। रानी चेन्नम्मा ने रुद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज को राज-काज में भरपूर पथप्रदर्शन

किया। सितंबर 1824 में शिवलिंग रुद्रसर्ज का भी निधन हो गया लेकिन वैसे मृत्यु से पूर्व राजा ने अपने एक संबंधी के बच्चे को गोद लिया और शिवलिंगप्पा मल्लसर्जा नाम रखा। वसीयत भी की थी कि राज्य का भार राजमाता चेन्नम्मा संभाले। उनके इच्छानुसार शिवलिंगप्पा को कित्तूर का उत्तराधिकारी बनाया।

अंग्रेजों की नीति “डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स” के तहत दत्तक पुत्रों को राज करने का अधिकार नहीं था। इस बीच रानी चेन्नम्मा ने मुम्बई प्रान्त के लेफ्टिनेंट जनरल स्टुअर्ट रालफिंस्टन को एक पत्र लिखा। रानी ने अपने दत्तक राजकुमार शिवलिंगप्पा को कित्तूर का शासक स्वीकार करने का अनुरोध किया। लेकिन अंग्रेजों ने रानी की यह माँग ठुकरा दी।

धारवाड़ के कलेक्टर मि. थैकरे ने शिवलिंगप्पा को पद से हटाने का आदेश दिया और कहा कि रानी संरक्षिका का भार छोड़कर सभी अधिकार दीवान शेट्टी को सौंप दे। लेकिन रानी चेन्नम्मा ने इस आदेश को खारिज कर दिया। इससे युद्ध छिड़ गया। रानी चेन्नम्मा यह जानती थी कि उसके दोनों दीवान मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराव अंग्रेजों से मिले हुए थे और यह भी जानती थी कि अंग्रेज सरकार कभी भी कित्तूर पर कब्जा जमाने के लिए आक्रमण कर सकती है, इसलिए उन्होंने युद्ध की तैयारियाँ प्रारंभ कर दी। हिन्दू और मुसलमानों दोनों ही पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे थे और स्वयं भी युद्धभ्यास में जुट गईं और इन सब तैयारियों का निरीक्षण कर रही थी।

रानी चेन्नम्मा ने कित्तूर राज्य की जनता से कहा कि “कंपनी सरकार हम से कित्तूर लेना चाहती है, लेकिन जब तक मेरी नसों में रक्त की एक भी बूँद है तब तक कित्तूर किसी के सामने सिर नहीं झुकाएगा। पराधीन होने से मर जाना अच्छा है।” रानी की भाषण से प्रेरित होकर कित्तूर के जनता युद्ध की तैयारी में लगी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 23 सितंबर 1824 का दिन स्मरणीय होगा। उस दिन कित्तूर के किले पर अंग्रेजों का घेरा पड़ गया और उनके मदांध नेता थैकरे ने किले के बाहर से धमकी दी, तभी अचानक किले का फाटक खुला और मर्द के वेश में रानी चेन्नम्मा शेरनी की भांति अंग्रेजों की सेना पर टूट पड़ी। उसके पीछे दो हजार देश भक्तों की जुझारू फौज थी। भयानक युद्ध हुआ। कित्तूर के सैनिक अपने प्राण हथेली पर रखकर आए थे। रानी की प्रेरणा ने उनमें बिजली की शक्ति भर दी। उनके प्रचंड वेग को अंग्रेजों की सेना न सह सकी। थैकरे मारा गया और अंग्रेज सेना भाग खड़ी हुई। देशद्रोही मल्लप्पा शेट्टी और वेंकटराव का भी काम तमाम कर दिया गया, दो ब्रिटिश अधिकारी सर वाल्टर इलियट और श्री रुटीवेंसन को बंधक बना लिया गया था।

अंग्रेजों ने रानी को संदेश भेजा कि अगर वे उनके अधिकारियों को छोड़ दे तो अंग्रेज फिर कभी कित्तूर की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखेंगे। रानी चेन्नम्मा ने उन पर यकीन कर लिया और बंधकों को रिहा कर दिया लेकिन ब्रिटिश अधिकारी चैपलिन ने धोखेबाजी से और भी सैनिकों के साथ युद्ध जारी

रखा। कित्तूर ऐसे हमले के लिए तैयार नहीं था, फिर भी कित्तूर की सेना अपनी रानी के साथ ताकत से लड़ी। रानी चेन्नम्मा ने अपने डिप्टी संगोली रायन्ना की सहायता से जमकर लंबी लड़ाई लड़ी। दुर्भाग्य से सेना में गद्दारों ने बारूद में गोबर मिलाकर रानी और उनके शीर्ष कमांडरो को धोखा दिया, हथियारों को बेकार कर दिया।

रानी चेन्नम्मा को गिरफ्तार कर लिया गया और बैलटोंगल किले में कैद कर लिया गया। संगोली रायन्ना भूमिगत होकर अंग्रेजों पर छापामार हमले करते रहे लेकिन 1829 में अंग्रेजों ने रायन्ना को भी पकड़ लिया और उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया। उसके बाद दत्तक राजकुमार शिवलिंगप्पा को भी ब्रिटिश ने गिरफ्तार किया था, रानी चेन्नम्मा की आखिरी उम्मीद रायन्ना ही थे, उसी साल 2 फरवरी 1829 में रानी चेन्नम्मा ने अंग्रेजों की जेल में ही अपनी आखिरी सांस ली, रानी चेन्नम्मा को बैलटोंगल में दफनाया गया था, जो अब समाधि के स्मारक के रूप में कार्य करता है।

- उनकी पहली जीत और विरासत का जश्न अब भी कर्नाटक में मनाया जाता है। हर साल कित्तूर में 22 से 24 अक्टूबर तक कित्तूर में उत्सव लगता है।
- दक्षिण भारतीय सिनेमा में 1961 में उनके जीवन पर एक कन्नड़ फिल्म भी बनी।
- 23 अक्टूबर सन् 1977 को रानी चेन्नम्मा की 200वीं जयंती पर भारतीय डाक विभाग ने एक विशेष टिकट जारी किया था।
- बेंगलूर और कोल्हापुर के बीच एक दैनिक ट्रेन का नाम रानी के नाम पर “रानी चेन्नम्मा एक्सप्रेस” रखा गया था।
- रानी चेन्नम्मा के सम्मान में, तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतीभा पाटिल 11 सितंबर 2007 को भारतीय संसद परिसर के सामने उनकी एक प्रतीमा का अनावरण किया। इस दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, गृह मंत्री शिवराज पाटिल, लोक सभा स्पीकर सोमनाथ चटर्जी, बी. जे. पी. नेता एल.के.आडवाणी, कर्नाटक के मुख्य मंत्री राय डी. कुमारस्वामी और दूसरे लोग भी उपस्थित थे। इस प्रतिमा को कित्तूर रानी चेन्नम्मा मेमोरियल कमिटी ने बनवाया था। रानी चेन्नम्मा का अन्य स्मारक बेंगलुरु, कित्तूर, बेलगावी और हुबली में देखे जा सकते हैं।

रानी चेन्नम्मा ब्रिटिश उपनिवेशवाद का विरोध करने वाली पहली महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थीं। वह एक राष्ट्रीय वीरांगना हैं, जो कर्नाटक में प्रसिद्ध हैं और भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रतीक हैं।

चैबकरामन पिल्लै – स्वतंत्रता सेनानी जिन्होंने जय हिन्द का नारा दिया



श्रीमती वी चित्रा
हिंदी अधिकारी



चैबकरामन पिल्लै का जन्म 15 सितंबर 1891 को तिरुवनंतपुरम में हुआ था। उनके पिता एक पुलिस कांस्टेबल चिन्नस्वामी पिल्लै थे और उनकी मां नागम्मल थीं। उन्होंने 1905 में बंगाल के विभाजन का विरोध करके स्वतंत्रता के लिए अपना संघर्ष शुरू किया। वह बंगाल के विभाजन के विरोध में बाल गंगाधर तिलक के साथ शामिल हुए। जब त्रावणकोर राज्य सरकार के खिलाफ उनके क्रांतिकारी भाषणों के कारण ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करने की कोशिश की, तब वह 1908 में अपने दोस्त सर वाल्टर विलियम्स स्ट्रिकलैंड की मदद से जर्मनी भाग गए।

बर्लिन विश्वविद्यालय में, उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए जर्मन लोगों का समर्थन जुटाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थक भारतीय समिति का गठन किया। वह जर्मनी में हरदयाल, राजा महेंद्र प्रताप, डॉ. प्रभाकर और ए. सी. नांबियार जैसे कई क्रांतिकारी भारतीय नेताओं के संपर्क में आए। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संदेश फैलाने के लिए प्रो-इंडिया नामक समाचार पत्र शुरू किया। उन्होंने अंग्रेजों को हराने के लिए जर्मनी की ओर से प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया।

इंजीनियरिंग की डिग्री के साथ वे जर्मन नौसेना में कूजर एम्डेन में एक अधिकारी के रूप में शामिल हुए, जिसने ब्रिटिश जहाजों पर हमला किया और भारत में कई स्थानों पर गोलाबारी की। 22 सितंबर 1914 को ब्रिटिश जहाजों के साथ भीषण समुद्री युद्ध के बाद मद्रास पर गोलाबारी की गई।

चैबकरामन पिल्लै की दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी से मुलाकात हुई। 1 दिसंबर 1915 को जब अफगानिस्तान में अस्थायी स्वतंत्र भारत सरकार की स्थापना हुई तब वह विदेश मंत्री थे। 1919 में वियना में उनकी मुलाकात सुभाष चंद्र बोस से हुई। हालाँकि वे जर्मन सेना में शामिल हो गए, लेकिन उन्होंने एडोल्फ हिटलर की भी आलोचना की, जब उन्होंने अपने

भाषण में भारत को अपमानित किया था। डॉ. चेंबकरामन पिल्लई की 26 मई 1934 को जर्मनी में रहस्यमय परिस्थितियों में मृत्यु हो गई।

भारत की अस्थायी सरकार के विदेश मंत्री

पिल्लई 1 दिसंबर 1915 को काबुल, अफगानिस्तान में स्थापित भारत की अनंतिम सरकार के विदेश मंत्री थे, जिसके राष्ट्रपति राजा महेंद्र प्रताप और प्रधान मंत्री मौलाना बरकतुल्लाह थे। हालाँकि, युद्ध में जर्मनों की हार ने क्रांतिकारियों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया और 1919 में अंग्रेजों ने उन्हें अफगानिस्तान से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया।

इस दौरान जर्मन अपने उद्देश्यों से भारतीय क्रांतिकारियों की मदद कर रहे थे। हालाँकि भारतीयों ने जर्मनों को यह स्पष्ट कर दिया कि वे आम दुश्मन के खिलाफ उनकी लड़ाई में समान भागीदार थे, जर्मन क्रांतिकारियों के प्रचार कार्य और सैन्य खुफिया जानकारी का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए करना चाहते थे।

1907 में, पिल्लई ने "जय हिंद" शब्द गढ़ा, जिसे 1940 के दशक में आबिद हसन के सुझाव पर भारतीय राष्ट्रीय सेना के नारे के रूप में अपनाया गया था। भारत की आजादी के बाद यह एक राष्ट्रीय नारा बनकर उभरा।

विवाह और मृत्यु

1931 में, पिल्लई ने मणिपुर की लक्ष्मी बाई से शादी की, जिनसे उनकी मुलाकात बर्लिन में हुई थी। दुर्भाग्य से उनका साथ बहुत कम समय तक बीता, क्योंकि पिल्लई जल्द ही बीमार पड़ गए। धीमी विषाक्तता के लक्षण थे और वे इलाज के लिए इटली गए थे। 26 मई 1934 को बर्लिन में उनकी मृत्यु हो गई। लक्ष्मीबाई 1935 में पिल्लई की अस्थियों को भारत ले आईं जहां बाद में उन्हें पूरे राजकीय सम्मान के साथ कन्याकुमारी में विसर्जित कर दिया गया। यह पिल्लई की अंतिम इच्छा थी कि उनकी राख को उनके परिवार के मूल स्थान नानजिलनाडु (कन्याकुमारी) में छिड़का जाए।

चेंबकरामन पिल्लई महान भारतीय क्रांतिकारियों में से एक हैं जिन्होंने अपने अविश्वसनीय प्रयासों और साहस से हमारी मातृभूमि को गौरवान्वित किया। लेकिन राष्ट्र किसी तरह उस महान नायक का सम्मान करना भूल गया। वह महान नायकों और देशभक्तों में से एक थे, जिन्होंने विदेश जाकर अंग्रेजों के एक अन्य दुश्मन जर्मनों के समर्थन से ब्रिटिश राज से भारत की आजादी के लिए लड़ने के लिए अपनी सेना का प्रदर्शन किया। विदेश में बड़े होने के बावजूद, चेंबकरामन ने अपने जुनून और उत्साह में एक प्रतिशत भी खोए बिना अपना पूरा जीवन भारत माता की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। वह उन कुछ लोगों में से एक थे जो अंग्रेजों

को अपनी मातृभूमि से बाहर निकालने और बाहर से सशस्त्र हमला करने के लिए आम दुश्मन से हाथ मिलाना चाहते थे। उनके प्रभाव और शक्ति ने जर्मनों को भी उन पर विश्वास करने पर मजबूर कर दिया।

प्रारंभिक जीवन

चेंबकरामन पिल्लई का जन्म दक्षिण भारत के त्रावणकोर राज्य के तिरुवनंतपुरम में चिन्नास्वामी पिल्लई और नागम्मल के एक औसत मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनका परिवार तमिल मूल का था और तिरुवनंतपुरम में बस गया क्योंकि उनके पिता त्रावणकोर राज्य सरकार सेवा में हेड कांस्टेबल थे। उन्होंने अपनी प्राथमिक और हाई स्कूल की शिक्षा थाइकाडु मॉडल स्कूल, तिरुवनंतपुरम में की। अपने स्कूल के दिनों के दौरान, चेम्बकरमन को एक ब्रिटिश जीवविज्ञानी, सर वाल्टर स्ट्रिकलैंड से मिलने का सौभाग्य मिला, जिन्होंने वनस्पति नमूनों के लिए शहर का दौरा किया था। एक बार जब वे दौरे पर आए, तो उन्होंने चेम्बकरामन और उनके चचेरे भाई पद्मनाभ पिल्लई को अपने साथ चलने के लिए कहा। हालाँकि, पद्मनाभ ने कोलंबो को बीच में ही छोड़ दिया और वापस तिरुवनंतपुरम भाग गए। चेम्बकरामन ने अपनी यात्रा जारी रखी और यूरोप पहुंचे। यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

यूरोप में जीवन

स्कूल खत्म करने के बाद, चेम्बकरामन ने इंजीनियरिंग डिप्लोमा हासिल करने के लिए एक तकनीकी संस्थान में शामिल हो गए। जल्द ही, प्रथम विश्व युद्ध छिड़ गया और चेम्बकरामन को अपनी दीर्घकालिक योजनाओं को पूरा करने का अवसर मिला। जर्मन दूतावास की मदद से उन्होंने सितंबर 1914 में ज्यूरिख में मुख्यालय के साथ अंतर्राष्ट्रीय भारत समर्थक समिति का गठन किया। उन्होंने खुद को समूह का नेता घोषित किया। उसी समय, उन्होंने विदेशों में भारतीय क्रांतिकारियों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए नई परिस्थितियों का लाभ उठाने की कोशिश करते देखा। इसके अलावा, सरोजिनी नायडू के बड़े भाई वीरेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय के अध्यक्ष के रूप में, भारतीय प्रवासी समूह ने बर्लिन में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय समूह का गठन किया। समूह में भूपेन्द्रनाथ दत्ता, पुन्नकल ए.रामन पिल्लई, तारकनाथ दास, बरकतुल्लाह, चंद्रकांत चक्रवर्ती एम. प्रभाकर ब्रेंद्र सरकार और हेरम्बालाल गुप्ता शामिल थे। अक्टूबर 1914 में चेंबकरामन बर्लिन गए और समूह में शामिल हो गए। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय भारत समर्थक समिति का भारतीय अंतर्राष्ट्रीय समिति में विलय कर दिया और इसे बर्लिन समिति का नाम दिया। समिति ने एम्स्टर्डम, स्टॉकहोम और वाशिंगटन सहित यूरोप और अमेरिका के विभिन्न हिस्सों में शाखाएँ खोलीं।

क्रांतिकारी गतिविधियाँ

बर्लिन में बर्लिन समिति की स्थापना के बाद, लाला हर दयाल को आंदोलन में शामिल होने के लिए राजी किया गया, जिससे इसी उद्देश्य के लिए गदर पार्टी को बढ़ावा मिला। परिणामस्वरूप भारतीय स्वतंत्रता समिति हिंदू-जर्मन षडयंत्र और अमेरिका में गदर पार्टी में शामिल हो गई। चेंबकरामन की बुद्धिमत्ता, चतुर संगठनात्मक कौशल और अदम्य साहस ने जर्मन कैसर की प्रशंसा जीतने में मदद की। जर्मनों के बीच उनका विश्वास ऐसा था कि उन्हें हिंद महासागर में जर्मन नौसैनिक अभियानों का नेतृत्व करने की अनुमति दी गई थी। इस अवधि के दौरान, उन्होंने जर्मन जहाज "एम्डेन" की कमान संभाली और अंग्रेजी युद्धपोतों को नष्ट कर दिया। कोई अन्य विकल्प न होने के कारण, ब्रिटिश सरकार को चेंबकरामन को पकड़ने और उसके आत्मसमर्पण के लिए एक लाख पाउंड के इनाम की घोषणा करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

हालाँकि, भारत का चतुर शेर कभी भी ब्रिटिश शिकारियों के हाथ नहीं पड़ा। भारत में दुश्मन पर हमला करने के लिए भारत के बाहर भारतीय सेना खड़ी करने में चेंबकरामन, रास बिहारी बोस और सुभाष चंद्र बोस के अग्रदूत साबित हुए। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय स्वयंसेवक बल की स्थापना की और स्वयंसेवकों को सैन्य वर्दी और अनुशासन प्रदान किया। 1919 में, वे वियना में सुभाष चंद्र बोस से मिले और मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए भारतीय सैनिकों के बीच विद्रोह कराकर अंग्रेजों पर हमला करने की अपनी योजना बताई। चेंबकरामन की बातों का बोस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रीय सेना बनाने का अपना सपना पूरा कर लिया।

अनंतिम सरकार में कार्यकाल

चेंबकरामन पिल्लई पहले स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जो भारत और विदेशों में रहे और उन्होंने भारत और भारतीयों को देश की आजादी के लिए "जय हिंद" का नारा दिया। यूरोप से स्वतंत्रता के लिए खड़े होने और लड़ने के अलावा, वह दिसंबर 1915 में अफगानिस्तान में स्थापित भारत की अनंतिम सरकार के विदेश मंत्री बने। काबुल से राजा महेन्द्र प्रताप सिंह राष्ट्रपति और मौलाना बरकतुल्लाह प्रधानमंत्री बने। परन्तु युद्ध में जर्मनों की पराजय ने क्रांतिकारियों की आशाओं पर पानी फेर दिया।

नाजी क्रोध का शिकार

यह सच है कि जर्मनों ने स्वार्थी उद्देश्यों से जर्मनी में भारतीय क्रांतिकारियों की मदद की। हालाँकि भारतीय देशभक्तों ने जर्मनों को स्पष्ट रूप से कहा था कि वे समान भागीदार होंगे, उन्होंने विद्रोह किया और अपने आम दुश्मन, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, क्योंकि वे धन, हथियार और गोला-बारूद प्रदान करते थे, और जर्मन हावी थे इसलिए, जर्मनों का इरादा अपने

काम के लिए भारतीयों का शोषण करना था। इस प्रकार, जैसे-जैसे जर्मन युद्ध हारने लगे, उन्होंने क्रांतिकारियों में रुचि खो दी। इसके अलावा, वे उन्हें संदेह की दृष्टि से देखने लगे, जिससे भारतीय क्रांतिकारियों और जर्मनों के बीच संबंध कमजोर हो गए।

व्यक्तिगत जीवन

चेम्बकरामन पिल्लई 1931 में बर्लिन में भारत के मणिपुर की लक्ष्मीबाई से मिले और उनसे शादी की। जब एडोल्फ हिटलर ने भारतीयों को खुद पर शासन करने और दूसरों को देखने के लिए अयोग्य समझना शुरू कर दिया, तो चेम्बकरामन हिटलर के सामने खड़े हुए और उन्हें लिखित माफी जारी करने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार, 26 मई, 1934 को, उन्हें नाज़ियों के क्रोध का शिकार होना पड़ा, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने हिटलर के आदेश पर चेम्बकरामन को भोजन में जहर देकर मार डाला था। वे सिर्फ 42 वर्ष के थे। जबकि वे चाहते थे कि उनकी राख घर ले जाया जाए, उनकी पत्नी को उनकी आखिरी इच्छा पूरी करने में 33 साल लग गए, उस अवधि के दौरान उन्होंने सभी गंभीर कठिनाइयाँ और कष्टों को सहन किया था क्योंकि नाज़ियों ने उनके जीवन को दुखी और यातनापूर्ण बना दिया था। हालाँकि, उन्होंने उम्मीद नहीं खोई और उनकी राख, डायरी और गुप्त दस्तावेज़ सुरक्षित कर लिए और बर्लिन, इटली और स्पेन के रास्ते मुंबई की यात्रा की। चेम्बकरामन की अस्थियाँ 16 सितंबर, 1966 को भारतीय नौसेना के युद्धपोत आईएनएस द्वारा कोच्चि लाई गईं।

अंतिम तारीख

1891: भारत के तिरुवनंतपुरम में जन्म

1906: सर वाल्टर स्ट्रिकलैंड के साथ यूरोप की यात्रा की और ऑस्ट्रियाई स्कूल में दाखिला लिया ।

1914: सितंबर में ज्यूरिख में इंटरनेशनल प्रो-इंडिया कमेटी की स्थापना की और अध्यक्ष बने।

1914: अक्टूबर में बर्लिन चले गए और भारतीय स्वतंत्रता में शामिल हुए।

1915: अफगानिस्तान में भारत की अस्थायी सरकार के विदेश मंत्री बने ।

1919: वियना में सुभाष चंद्र बोस से मुलाकात हुई।

1931: लक्ष्मीबाई का विवाह

1934: जर्मनी में 26 मई को 42 वर्ष की उम्र में नाज़ियों द्वारा भोजन विषाक्तता से हत्या कर दी गई ।

1966: उनकी पत्नी द्वारा भारत वापस लाया गया।

तमिल संस्कृति की एक झलक



श्री मोहन प्रकाश
कनिष्ठ अनुवादक

तमिल संस्कृति भारतीय उपमहाद्वीप का महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह एक विशेष धरोहर को प्रतिष्ठित करता है जो अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और भाषाई मौलिकताओं के लिए प्रसिद्ध है। तमिलनाडु एक ऐसा राज्य है जिसकी गहरी जड़ें संस्कृति और परंपरा हैं क्योंकि मध्यकाल से चोल वंश, पांड्य वंश, होयसाला राजवंश और सातवाहन राजवंश जैसे शासकों की विरासत द्वारा लाई गई दक्षिण भारत की समृद्ध विरासत शामिल है। तमिल संस्कृति एक विशेष और अमूल्य धरोहर को प्रतिष्ठित करने वाली है, जिसका इतिहास हजारों वर्षों से चला आ रहा है। यह वह स्थान है जहां से द्रविड संस्कृति की शुरुआत हुई थी और आज भी वहां के लोग इसका पालन करते हैं। हिंदू मंदिरों की मशरूमिंग लोगों की पवित्रता पर प्रकाश डालती है, जिससे एक साथ संगीत, नृत्य और साहित्य का संवर्धन हुआ। तमिलनाडु में कई प्रकार के लोक संगीत और नृत्य शैलियाँ हैं। इनका सामान्य लोगों के लोकाचार और सौंदर्य-मूल्यों को प्रतिबिंबित करने में विशेष संदर्भ है क्योंकि ये उनके जीवन, तत्व-ज्ञान, पर्यावरण और दिनचर्या से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। इन कला शैलियों के प्रतिपादन में लोगों की सक्रिय भागीदारी और इनकी लोगों के बीच लोकप्रियता उल्लेखनीय है। उदाहरण के तौर पर, तमिल नाडु के पारंपरिक और प्रमुख कला रूपों में से एक - थेरू कूथू।

तमिल संस्कृति के बारे में कई महत्वपूर्ण पहलुः-

तमिलनाडु की भाषा :

तमिल संस्कृति की मूल धारा तमिल भाषा में है, जो एक प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक परंपरा का हिस्सा है। तमिल साहित्य और कविता विश्व की अद्वितीयता के साथ भाषा कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। तमिल भाषा मुख्य रूप से दो भाषाओं का मिश्रण है जो अंग्रेजी और संस्कृत हैं। कई शब्द अंग्रेजी से लिए गए हैं, जिन्हें संस्कृत से ढाला गया है और तमिल भाषा के रूप में इस्तेमाल किया गया है। इसका उपयोग श्रीलंका, मॉरीशस, मलेशिया और सिंगापुर जैसे कई अन्य स्थानों में भी किया जाता है। यह हमारी पहली शास्त्रीय भाषा है और हमारे संविधान में निर्धारित भाषाओं में से एक है।

परंपरागत वस्त्र और आभूषणः

तमिल संस्कृति में परंपरागत वस्त्र और आभूषणों की मौलिकता को महत्वपूर्ण रूप से माना जाता है। तमिलनाडु के सूत्रकार कला और रेशमी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध हैं। तमिलनाडु में पुरुष एक लंबा सूती कपड़ा पहनते हैं जिसे कमर के चारों ओर लपेटा जाता है जिसे लुंगी कहा जाता है और एक शर्ट के साथ अंगवस्त्र नाम का कपड़ा होता है। महिलाएं उस पर जरी वर्क वाली साड़ी पहनती हैं और विशेष

रूप से कांचीपुरम साड़ी पहनती हैं और लड़कियां एक लंबी स्कर्ट और दुपट्टे या शॉल के साथ ब्लाउज पहनती हैं जिसे दावनी कहा जाता है।

खान पान :



तमिल संस्कृति में खाना भी महत्वपूर्ण हिस्सा है जो इस समृद्ध संस्कृति को विशेष बनाता है। तमिलनाडु के व्यंजनों में मुख्य सामग्री जो वे हर व्यंजन में उपयोग करते हैं वह है नारियल का तेल, सहजन और करी पत्ता। उनके पास बहुत सारे स्नैक्स भी हैं, उदाहरण के लिए, केले के चिप्स, बोंडा, अप्पलम, मुरुक्कु। चूंकि यह कई समुद्रों और झरनों से घिरा हुआ है, इसलिए आपको बहुत ही स्वादिष्ट समुद्री भोजन भी मिलेगा। आपको इनमें से प्रत्येक आइटम को आजमाना चाहिए। मसाले खरीदने के लिए तमिलनाडु सबसे अच्छी जगह है क्योंकि यहां लौंग, इलायची, इमली जैसे उगाए जाने वाले मसाले अलग-अलग देशों में निर्यात किए जाते हैं। आपको यहां वेज और नॉन-वेज दोनों तरह का बेहतरीन खाना मिलेगा जैसे सांभर, इडली, और डोसा, पायसम, रसम, परोट्टा, बिरयानी, उपमा जैसे स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ तमिलनाडु की पारंपरिक खानपान के प्रमुख उदाहरण हैं।

कला नृत्य और संगीत



तमिल संस्कृति में कला और संगीत का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय क्लासिकल संगीत के रूप में कर्णाटक संगीत का उद्भव भी तमिलनाडु में हुआ था। भरतनाट्यम तमिलनाडु का शास्त्रीय नृत्य है जो भारत में नृत्य का सबसे सुंदर रूप है, इसके साथ ही विभिन्न अवसरों

पर और भी कई प्रकार के नृत्य किए जाते हैं और हर नृत्य का अपना महत्व होता है। कराकाट्टम एक प्राचीन लोक नृत्य है जो देवी मारियम्मन के सामने किया जाता है। कुर्वासी एक अन्य नृत्य रूप है जो कुछ पुरुषों और महिलाओं के समूह में किया जाता है जो अपने नृत्य के माध्यम से प्रेमियों की कहानी सुनाते हैं।

यह कला-रूप वेल्लूर, तिरुवन्नामलै, दक्षिण आरकोट और कांचीपुरम जिलों में व्यापक रूप से किया जाता है। कई सिलंबट्टम में नर्तक घुँघरू पहनते हैं और अपने हाथों में पायल या सिलंबु पकड़ते हैं। यह वेल्लूर, तिरुवन्नामलै, कांचीपुरम, धर्मपुरी और दक्षिण आरकोट (विल्लुपुरम जिला) जिलों में किया जाता है तथा यह एक मंदिर कला शैली है। कोक्कू कट्टईयाट्टम, वेल्लूर जिले से उत्पन्न एक विशेष कला रूप है, जिसमें नर्तक अपने पैरों में बंधे हुए लकड़ी के डंडे के साथ नृत्य करते हैं। आज, उच्च कौशल और पेशेवर पात्रता के साथ अनेक कलाकार मौजूद हैं।

देवराट्टम को विजय के बाद योद्धाओं का नृत्य कहा जाता है। कठपुतली नृत्य वहां भी प्रसिद्ध है जिसे बोम्मलाट्टम नाम दिया गया है। जानवरों का नृत्य कुछ ऐसा है जो देखने में आकर्षक है क्योंकि लोग विभिन्न जानवरों की तरह सुंदर कपड़े पहनते हैं, विभिन्न अवसरों पर लोगों के सामने प्रदर्शन करते हैं। बाघ नृत्य को पुलियाट्टम कहा जाता है, मोर नृत्य को मयिलाट्टम कहा जाता है, सांप नृत्य को पांपाट्टम कहा जाता है।

त्योहार

पोंगल तमिलनाडु में सबसे लोकप्रिय त्योहारों में से एक है जो सीधे चार दिनों तक मनाया जाता है। यह मूल रूप से फसल के मौसम का जश्न मनाने के लिए है और भगवान इंद्र को समर्पित है। इस त्योहार में लोग गायों को सजाते हैं और पोंगल नामक स्वादिष्ट भोजन और मिठाई बनाते हैं और इसे भगवान और जानवरों को चढ़ाते हैं। लोग एक-दूसरे के प्रति आभार प्रकट करने के लिए उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं। तमिलनाडु में हर घर के सामने रंगोली बनाना एक परंपरा है।

फसल कटाई के त्योहार पोंगल में जनवरी माह में किसान अपनी अच्छी फसल के लिए आभार प्रकट करने हेतु सूर्य, पृथ्वी और पशुओं की पूजा करते हैं। पोंगल के बाद दक्षिण तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में 'जल्लीकट्टू' (तमिलनाडु शैली की सांडो की लड़ाई) होता है। तमिलनाडु में अलंगनल्लूर 'जल्लीकट्टू' के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। 'चित्तिरै' मदुरै का लोकप्रिय त्योहार है। यह पांडय राजकुमारी मीनाक्षी और भगवान सुंदरेश्वर के अलौकिक परिणय बंधन की समृति में मनाया जाता है। तमिल महीने 'आडि' के अठारहवें दिन नदियों के किनारे 'आडिपेरूक्कू' पर्व मनाया जाता है। इसके साथ ही नई फसल की बुवाई से संबंधित काम भी शुरू हो जाता है। नृत्य महोत्सव एक अद्भुत महोत्सव है। समुद्र तट से लगे प्राचीन नगर

मामल्लापुरम में पल्लव राजाओं द्वारा 13 शताब्दी पूर्व चट्टानों से काटकर बनाए गए स्तंभों का एक खुला मंच है, जिस पर लोकनृत्यों के अलावा नृत्यकला के सर्वश्रेष्ठ और सुविख्यात कलाकारों द्वारा भरतनाट्यम, कुचुपुडी, कथकली और ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं। 'नाट्यांजलि' नृत्य महोत्सव में मंदिरों की नगरी चिदंबरम के निवासी सृष्टि के आदि नर्तक भगवान नटराज को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

महामघम

महामघम एक पवित्र पर्व है, जो बारह वर्ष में एक बार होता है। मंदिरों की नगरी कुंभकोनम को यह नाम देवी पात्र 'कुंभ' से मिला है। ग्रीष्म महोत्सव हर वर्ष 'पर्वतीय स्थलों की रानी' सदाबहार उटी, विशिष्ट स्थल कोडाइकनाल या येरूकाड की स्वास्थ्यवर्द्धक ऊंची पहाड़ियों पर मनाया जाता है। कंथुरी उत्सव वास्तव में धर्मनिरपेक्ष त्योहार है, जिसमें विभिन्न समुदायों के श्रद्धालु संत फकीर कादिरवाली की दरगाह पर इकट्ठे होते हैं। संत कादिरवाली के शिष्य-वंशजों में से किसी एक को 'पीर' अथवा आध्यात्मिक नेता चुना जाता है और उसकी अर्चना की जाती है। इस उत्सव के दसवें दिन फकीर की दरगाह पर चंदन घिसा जाता है और उस पवित्र चंदन को सब लोगों में बांट दिया जाता है। 'वेलंकन्नी' उत्सव के बारे में अनेक आश्चर्यजनक दंतकथाएं प्रचलित हैं, जिनमें से एक यह है कि सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाली नाविकों ने कुंवारी मेरी माता के लिए एक विशाल गिरजाघर बनवाने का संकल्प लिया था, क्योंकि उन्हीं की कृपा से भयंकर समुद्री तूफान से उनके जीवन की रक्षा हुई थी। 'वेलंकन्नी' उत्सव देखने के लिए हजारों लोग नारंगी पट्टियां डालकर उस पवित्र स्थान पर एकत्र होते हैं, जहां जहाज आकर जमीन पर लगा था। कुंवारी मेरी माता द्वारा रोगियों को ठीक कर देने की चमत्कारी शक्तियों से संबंधित अनेक बातें भी इतनी ही प्रचलित हैं।

ऐतिहासिक धरोहर और वास्तुकला

तमिलनाडु में लोग संस्कृति और धर्म के प्रति बहुत समर्पित हैं जो उनकी कला और वास्तुकला में आसानी से देखे जा सकते हैं जैसे विशाल महलों, मूर्तियों, मंदिरों, स्मारकों आदि। स्मारक और मंदिर विशाल और बहु-मंजिला हैं जिन्हें अद्भुत बारीक नक्काशी और विभिन्न प्रकार के डिजाइन किए गए हैं। रंग यह दर्शाता है कि उनका जीवन कितना भव्य और उत्तम दर्जे का था। तमिल संस्कृति में कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल हैं, जैसे कि महाबलीपुरम, तंजावुर बृहदेश्वर मंदिर, और चोल साम्राज्य के अन्य सम्राटीय स्मारक।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, तमिल लेखक और साहित्यिक चित्तरंजन दास, प्रसिद्ध तमिल कवि सुब्रमण्य भारती आदि तमिल संस्कृति के प्रति अपने गहरे रुचि के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में तमिल संस्कृति की महत्ता और सौंदर्य के कुछ पहलुओं का वर्णन किया है।

मणिपुर हिंसा



श्रीमती जी. संगीता
व.लेखापरीक्षक

तीन महीने से ज्यादा हो गए, मणिपुर में हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही। बल्कि वक्त बीतने के साथ और भी ज्यादा दिल दहला देनेवाली तस्वीरें सामने आ रही हैं। कुछ दिन पहले एक विडियो वाइरल हुई जिसमें राज्य की दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर घुमाया जा रहा है, उत्पीड़न किया जा रहा है। इस विडियो के सामने आने के बाद से पूरा देश स्तब्ध है। प्रधानमंत्री पहली बार मणिपुर पर कुछ बोले। वहीं, सुप्रीम कोर्ट ने मामले का खुद संज्ञान लेते हुए कहा कि सरकार को कार्रवाई के लिए कुछ समय देंगे वरना खुद हस्तक्षेप करेंगे।

दो जनजातीय महिलाओं के साथ हुई यह घटना चार मई की बताई जा रही है। पुलिस ने उस शख्स को गिरफ्तार कर लिया है, जिसे मुख्य साजिशकर्ता बताया जा रहा है। मणिपुर में जो कुछ चल रहा है, आइए उसे समझने की कोशिश करते हैं।

भौगोलिक आधार पर मणिपुर को दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है। एक हिस्सा राजधानी इंफाल वाला, जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का केवल 10 फीसदी है, लेकिन यहाँ आधी से ज्यादा आबादी रहती है। दूसरा हिस्सा, पहाड़ी इलाके, जहाँ ज्यादातर जनजातियों का वास है। इंफाल घाटी में मैतेई समुदाय के लोग रहते हैं और वे अधिकतर हिंदू हैं। दूसरी ओर, जनजातियों में अधिकतर नागा और कुकी प्रमुख हैं। टकराव मैतेई बनाम नागा और कुकी का है।

मौजूदा विरोध शुरू हुआ चुराचंदपुर जिले से, यहाँ कुकी आदिवासी ज्यादा रहते हैं। गवर्नमेंट लैंड सर्वे के विरोध में द इंडिजेनस ट्राइबल लीडर्स फोरम ने बंद का ऐलान किया था और इसी दौरान प्रदर्शन हिंसक हो गया।

पहले जो हिंसा हुई, उसमें कुकी समुदाय और पुलिस आमने-सामने थी। फिर, तीन मई को आदिवासियों की ओर से मार्च निकाला गया। इसका मुख्य एजेंडा था मैतेई समुदाय को एस.टी. का दर्जा देने का विरोध। यहाँ से लड़ाई मैतेई बनाम जनजातीय लोगों की हो गई। मैतेई समुदाय के लोग लंबे अर्से से एस. टी. दर्जे की माँग कर रहे हैं। मामला मणिपुर हाई कोर्ट में भी गया था। अदालत ने समुदाय को आदिवासी दर्जा देने का आदेश दिया है। फिलहाल इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गयी है।

आदिवासी समुदाय और सरकार के बीच विरोध की एक वजह अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई भी है। राज्य सरकार का कहना है कि जंगलों पर अवैध कब्जा करके अफीम की खेती की जा रही है। दूसरी ओर, आदिवासी इन जमीनों को अपनी पैतृक बता रहे हैं।

मैतेई समुदाय का आरोप है कि हिंसा को बढ़ाने में बाहरी लोगों का हाथ है। उन लोगों की पहचान के लिए सरकार को एन.आर.सी.(National Register of Citizens) कराना चाहिए।

आदिवासियों में सरकार को लेकर भी गुस्सा है। उनका कहना है कि सरकार की ओर से इस मामले में बयान नहीं दिया गया। ट्राइबल फोरम की मैरी जौन्स तो कहती हैं कि हम खुद को मणिपुर सरकार का हिस्सा नहीं मानते।

मणिपुर में इस समय जगह-जगह विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। अर्ध-सैनिक बलों ने कमान संभाल रखी है। चुराचंदपुर में हिंसा में मारे गए लोगों की याद में एक स्मारक बनाया गया है। मणिपुर हिंसा में अभी तक करीब डेढ़ सौ लोगों की मौत हो चुकी है। करीब 60 हजार बेघर हुए हैं। आगजनी की पाँच हजार से ज्यादा घटनाएँ हुई हैं।

लगभग तीन महीने से ज्यादा हो गई, मणिपुर में जब इस समस्या शुरू हुई, लेकिन अब तक इस समस्या का कोई समाधान नहीं मिल पाया।



स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान



श्रीमती लेखा.डी.पी.
व.अनुवादक

भारत को स्वतंत्र हुए 77 साल हो गए, देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों व कवियों और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। देश भक्ति का संदेश फैलाने और अंग्रेजों के अत्याचारों को उजागर करने के लिए कला और साहित्य का उपयोग किया गया। ऐसे कई साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी तूलिका से जन हृदय में देश भक्ति की भावना जगायी और आज़ादी के लिए लड़ने के लिए उन्हें प्रेरित किया। इनमें से प्रमुख हैं-रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र चटर्जी, सुभद्रा कुमारी चौहान, मुंशी प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, रामधारी सिंह दिनकर आदि।

राष्ट्रगान के रचयिता टैगोर का आज़ादी की लड़ाई में अहम योगदान रहा है। उन्होंने अपनी कविताओं और रचनाओं के जरिए देश के युवाओं में देश प्रेम की भावना जागृत किया। टैगोर ने 1905 में बंगाल विभाजन के बाद बंगाली आबादी को एकजुट करने के लिए बांग्लार माटी, बांग्लार जोल (बंगाल की मिट्टी, बंगाल का पानी) गीत लिखा। उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में ब्रिटिश सरकार द्वारा दिए गए “नाइटहुड” की उपाधि को अपने देश और देशवासियों के प्रति प्यार के कारण वापस कर दिया।

“वंदे मातरम्” के रचयिता और बंगाल के लोकप्रिय उपन्यासकार बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजों का विरोध किया था। देशप्रेम से ओत-प्रोत “वंदे मातरम्” भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों का प्रेरणा स्रोत और मुख्य उद्घोष बन गया था।

देश में कितने स्वतंत्रता सेनानी हुए जिन्होंने भारत देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, आज़ादी की इस लड़ाई में सिर्फ पुरुषों का ही नहीं, बल्कि महिलाओं का योगदान भी सराहनीय है, देश-प्रेमी महिलाओं में कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है, “खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी” – सुभद्राजी की “झांसी की रानी” कविता की इन पंक्तियों से हर भारतीय परिचित है, कवियत्री होने पर भी वह स्वतंत्रता संग्राम में बढ-चढकर भाग लिया, उन्होंने असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। वह दो बार जेल भी गई थीं, देश की स्वतंत्रता के लिए

रोज़ सभाएं करती थी, जगह-जगह जा जाकर अपने विचार रखती और आंदोलन के प्रति लोगों को जागरूक करती थी। आंदोलन का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वह उससे प्रेरित होकर राष्ट्रप्रेम पर कविताएं लिखने लगीं। इनकी हर एक कविता महिलाओं में देश के लिए कुछ करने का जोश भर देती थीं।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी का योगदान भी सराहनीय है। कथाकार से इतर पत्रकारिता की महत्ता को स्वीकार कर वह उससे संबद्ध हुए। प्रेमचंद जी का समय गाँधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिए अहिंसात्मक युद्ध का युग था। प्रेमचंद जी का पहला कहानी संग्रह - "सोजे वतन" था। इसकी एक कहानी "दुनिया का सबसे अनमोल रत्न" का अंतिम वाक्य है, "खून का वह आखरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे, दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ है।" इसी भाव की वजह से अंग्रेजी सत्ता ने "सोजे वतन" की प्रतियां जलवायी थीं। पत्रकारिता के क्षेत्र में, प्रेमचंद ने हंस और जागरण पत्रों का संपादन कर समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना संबंधी अपने विचारों द्वारा देशवासियों को सामाजिक असमानता, शोषण और अंग्रेजों की दासता से मुक्ति हेतु जागृत किया। प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं द्वारा अंग्रेजी सत्ता का विरोध तो किया ही भारत की उस सत्ता के विरुद्ध भी अपनी कलम चलाई जो आम जनता का शोषण करते हुए अंग्रेजी सत्ता का साथ दे रही थी। प्रेमचंदजी का कहना था कि "स्वराज्य" पद और अधिकार की प्राप्ति कराने के लिए नहीं, उच्च वर्ग के हितों के लिए सामान्य जनता के हितों का बलिदान नहीं हो पाएगा।

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह कविता आज भी देश के प्रति स्वाभिमान जगाने के लिए काफी है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय गुप्तजी की कृति "भारत-भारती" ने खूब यश प्राप्त किया जिससे प्रभावित होकर गांधीजी ने उन्हें "राष्ट्रकवि" की उपाधि से अलंकृत किया।

स्वतंत्रता की लड़ाई में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अहम भूमिका निभाई थी। भारतेन्दुजी द्वारा रचित "भारत दर्शन" देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत थी। उन्होंने "अंधेर नगरी चौपट राजा" नामक व्यंग्य के ज़रिए राजाओं की निरंकुशता और ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों का सटीक वर्णन किया।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी अपनी रचनाओं के ज़रिए अंग्रेजी शासन का विरोध किया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी लेखनी के जरिए आज़ादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले और दो साहित्यकार हैं - श्यामलाल गुप्त पार्षद और मोहम्मद इकबाल, श्यामलाल गुप्त द्वारा लिखा गया गीत "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा" और इकबाल रचित "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" ने आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे युवाओं में जोश भर दिया था।

हिंदी के अलावा बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल व अन्य भाषाओं में भी कवियों व साहित्यकारों ने राष्ट्र-प्रेम की भावनाएं जागृत की और जनमानस को आंदोलित किया। आज के समय में भी वैसी ही रचनाओं की जरूरत है जो जनमानस को आंदोलित कर सके और भ्रष्टाचार व अराजकता को दूर कर हृदय में मानवीय मूल्यों का संचार कर सके।



आजादी का अमृत महोत्सव



श्रीमती आर.श्रीविद्या
व.ले.प.अ.

आजादी का अमृत महोत्सव, प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल पूरा होने और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और मनाने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया है। देश की गौरवशाली परंपरा, समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विरासत को मनाने, स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मान देने, स्वाभिमान के साथ दुनिया के सभी राष्ट्रों से कदम मिलाकर चलने और आत्मनिर्भर होने के उद्देश्य से यह महोत्सव मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मार्च 2021 को साबरमती आश्रम से इस महोत्सव का शुभारंभ किया।

भारत सबसे प्रभावशाली सभ्यताओं में से एक और ज्ञान का केन्द्र रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितिक और आर्थिक पहचान को प्रगति की ओर ले जाने वाली तभी चीजों का एक मूर्त रूप है। यह महोत्सव देशवासियों में देश प्रेम और देश भक्ति की भावना जागृत करते हैं और राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा देता है। इससे हमारी आजादी के महत्व को बढ़ावा मिलता है और हमें यह याद दिलाया जाता है कि यह स्वतंत्रता आसानी से प्राप्त नहीं हुई। हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी प्राणों की आहुति देकर हमें आजादी की प्राप्ति में मदद की थी और इसलिए हमें उन्हें सम्मान के साथ याद करना चाहिए। यह महोत्सव हमें यह भी याद दिलाता है कि हमारे देश के लिए आजादी एक लक्ष्य है जिसे हमें निरंतर रक्षा करनी चाहिए।

भारत, पिछले कुछ सालों में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपलब्धियों से खूब नाम कमाया है। हमारा देश आज विज्ञान, अनुसंधान, चिकित्सा, अंतरिक्ष, कृषि इत्यादि क्षेत्रों में दुनिया के शीर्ष देशों में से एक है। स्वतंत्रता के बाद सभी क्षेत्रों में विकास किया जा रहा है। चांद और मंगल पर मानव रहित मिशन भेजनेवाले देशों की सूची में भारत का नाम शामिल है। चांद के साउथ पोल पर चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग के साथ ही भारत ने अंतरिक्ष में इतिहास रच दिया है। कोविड की महामारी के काल में, हमारा राष्ट्र न सिर्फ आत्मनिर्भर रहा, बल्कि अन्य देशों को भी मदद प्रदान किया। आपातकाल में भारत हमेशा दूसरे देशों की सहायता करती रहती है।

विविधता में एकता, भारत का तारक मंत्र है। धर्म और संस्कृति की ऐसी विविधता के बावजूद भी हम एक राष्ट्र हैं। आज भारत एक है, अखंड है और बहुत तीव्र गति से हर क्षेत्र में

आगे बढ़ रहा है। आजादी के बाद भारत को कई कठिनाई का सामना करना पड़ा जैसे की भुखमरी, महँगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, अपराध इत्यादि लेकिन भारत ने इन सब कठिनाइयों से बाहर निकलते हुए न केवल नए रास्तों बल्कि आत्मनिर्भर भारत एवं सशक्त भारत के रास्तों पर अग्रसर है।

भारत की जनता में आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान आदि जागृत करने में यह महोत्सव जोर देता है। अभी, पूरे विश्व में, भारत में युवा की आबादी सर्वोत्तम है। 66 प्रतिशत लोग 35 साल से कम आयु के हैं। महोत्सव के कार्यक्रम का उद्देश्य युवा पीढ़ी को देश के विकास और प्रगति के प्रति अधिक जागरूक करना भी है।

अमृत महोत्सव में कई कार्यक्रम का आयोजन, सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। जैसे - हर घर तिरंगा, पंच प्रण, मेरी माटी मेरा देश इत्यादि। आजादी के 75वीं वर्षगांठ पर इस अमृत महोत्सव में भारत के अपने उपलब्धियाँ@75 विचार@75, एक्शन@75 और संकल्प@75 शामिल हैं, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देगा।

आजादी की अमृत महोत्सव जन-जन का उत्सव है जो देशवासियों को अपने इतिहास, विरासत, देश प्रेम, देश की उन्नति में अपनी भागीदारी का अहसास दिलाता है, जिससे हम गर्व के साथ कहेंगे - “मेरा भारत महान”।



नये भारत, नयी उड़ान “मिशन चन्द्रयान”



श्री जितेन्द्र कु. जायसवाल
कनिष्ठ अनुवादक

23 अगस्त, 2023 का दिन भारत का अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नई उड़ान अर्थात् मिशन चन्द्रयान-3 की सफलता पाने के साथ, भारत की अंतरिक्ष एजेंसी ISRO ने वो कर दिखाया जिसने पूरे देश को जश्न मनाने का मौका दिया। 23 अगस्त, 2023 की शाम ठीक 6 बजकर 4 मिनट को ISRO ने चन्द्रयान-3 की साफ्ट-लैंडिंग के साथ एक नया इतिहास रच दिया। आज के बाद चाँद से जुड़े मिथक बदल जाएंगे, कथानक भी बदल जाएंगे साथ ही साथ नयी पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल जाएंगी।

कभी कहा जाता था – “चंदा मामा बहुत दूर के अब एक दिन वो भी आएगा जब बच्चे कहा करेंगे – चंदा मामा बस एक दूर के हैं।”

आज हर कोई कह रहा है – नए भारत की नई उड़ान, चाँद पर चन्द्रयान।

इंसानों की आदत है कुछ नया ढूँढना, जब तक हम अंटार्कटिका नहीं पहुँचे थे सोचते थे – पता नहीं क्या होगा? अंटार्कटिका जब मिला तब वहाँ कई देशों ने अपना रिसर्च सेंटर खोल दिए। इसी बात से आप चन्द्रयान-3 की कामयाबी के मायने समझ सकते हैं। अगले एक से डेढ़ दशक में इंटरनेशनल स्पेस एजेंसी को खत्म कर चाँद पर स्थायी स्पेस एजेंसी बनाने की योजना में लगे हैं। हमारा देश इसमें गंभीर और जिम्मेदार किरदार निभा सकता है। चंद्रयान-3 की कामयाबी ने पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि भारत अब अंतरिक्ष में भी एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है।

धरती से चाँद की दूरी लगभग 3 लाख 84 हजार कि.मी. है जिसे तय करने में, चन्द्रयान-3 को 40 दिन का समय लगा। आइए अब हम समझते हैं कि चंद्रयान-3 ने कैसे कदम-दर-कदम नित नई उपलब्धियाँ हासिल की।

चंद्रयान-3 के सफर को हम तीन हिस्सों में बाँट सकते हैं:—

- (i) पृथ्वी से उसकी कक्षा तक का सफर
- (ii) पृथ्वी से चंद्रमा की कक्षा तक का सफर
- (iii) चंद्रमा की कक्षा से लैंडिंग तक का सफर

17 अगस्त को प्रोपल्शन मॉड्यूल को लैंडर-रोवर से अलग किया गया और अंत में 23 अगस्त को चंद्रमा के साथ पोल में चंद्रयान-3 को रोवर की सफल सॉफ्ट लैंडिंग हुई।

चंद्रमा पर चंद्रयान-3 के सफल लैंडिंग को लेकर हमारे देश का हर जागरूक नागरिक गर्व महसूस कर रहा है। लोग अपने आप को इससे जुड़ा महसूस कर रहे हैं। मिशन चंद्रयान-3 भारत के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? और इस अभियान के जरिए भारत क्या पाना चाहता है?

चंद्रयान-3 जरूरी क्यों?

करीब 650 करोड़ के लागत वाला चंद्रयान-3 भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस मिशन का लैंडर चंद्रमा के उस हिस्से तक जाएगा, जिसके बारे में कोई जानकारी मौजूद नहीं है। यह अभियान चाँद के सतह पर रसायनिक तत्वों और मिट्टी-पानी के कणों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को देखेगा। चाँद की वीरान और उजाड़ सतह के नीचे कई बहुमूल्य धातुएँ मौजूद होने की संभावना है। इसमें सोना, प्लेटिनम और युरेनियम शामिल है। इस अभियान के पीछे रणनीतिक लक्ष्य भी निहित है।

चंद्रयान-3 के जरिए भारत पड़ोसी देश चीन की स्पेस साइंस में एक तरफा बढ़त को भी चुनौती देगा जो पहले ही अपने तीन अभियानों को मंजूरी दे चुका है।

भारत को क्या हासिल होगा?

मिशन चंद्रयान-3 के जरिये भारत दुनिया को बताना चाहता है कि उसके पास चाँद पर सॉफ्ट लैंडिंग करने और रोवर को वहाँ चलाने की काबिलियत है, इससे दुनिया का भारत पर भरोसा बढ़ेगा जो कमर्शियल बिजनेस बढ़ाने में मदद करेगा। भारत ने अपने हेवी लिफ्ट लॉच वैहिकल LUM3M4 से चंद्रयान को लॉच किया है। इस वैहिकल की काबिलियत भारत पहले ही दुनिया को दिखा चुका है।

बीते दिनों अमेजान के संस्थापक जैफ बैजोस की कंपनी ब्लू ऑरिजिन ने ISRO के LVM3 रॉकेट के इस्तेमाल से कमर्शियल और टूरिस्ट उद्देश्य से इस्तेमाल करना चाहता है। LUM3 के जरिये ब्लू ऑरिजिन अपने क्रू केप्सूल को प्लेट लॉ अर्थ ऑरबिट LEPO की स्पेस स्टेशन तक ले जाएगा। चाँद पर सॉफ्ट लैंडिंग में सफलता मिलने पर अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत ऐसा करने वाला चौथा और चाँद की साथ पोल पर जाने वाला पहला देश बन गया। चंद्रमा पर सफलता पूर्वक उतरने से पहले अमेरिका और रूस दोनों के कई स्पेसक्राफ्ट क्रेश हुए थे। चीन 2013 में अपने पहले प्रयास में सफल होने वाला एकमात्र देश है।

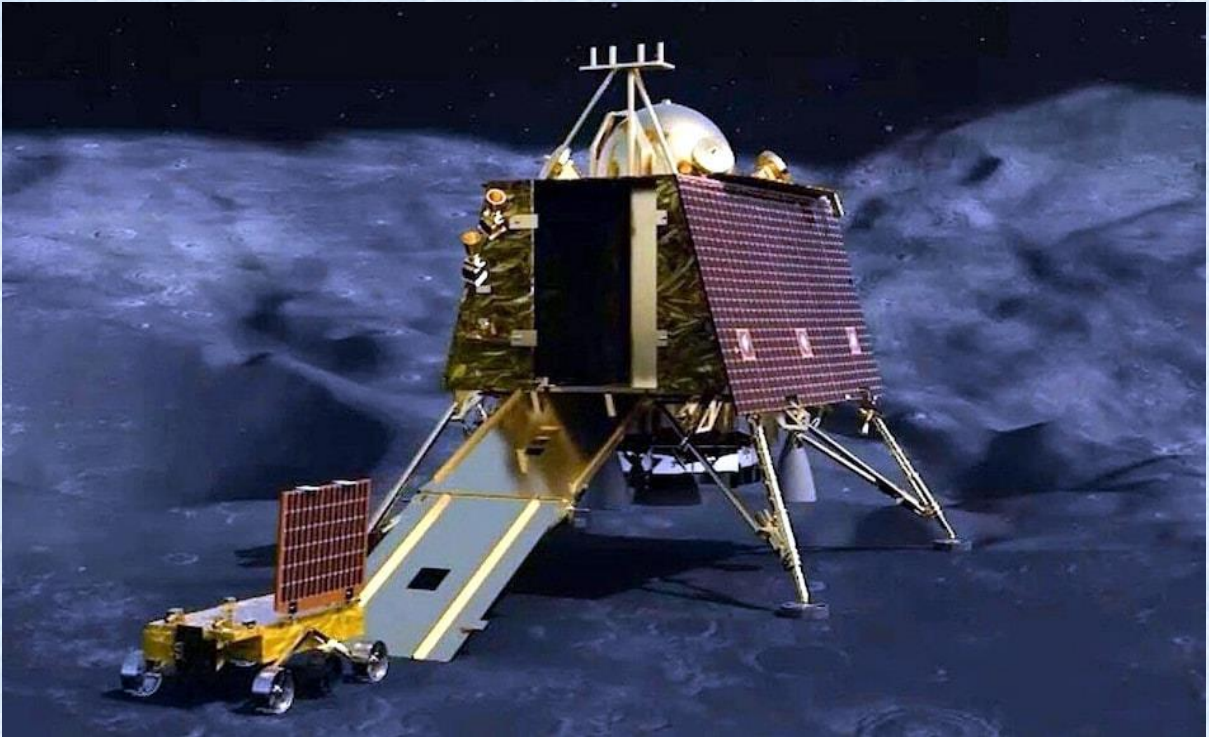
साउथ पोल पर ही सॉफ्ट लैंडिंग क्यों?

चन्द्रमा के पोलर क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों से काफी अलग है यहाँ कई हिस्से ऐसे हैं जहाँ सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुँचती है और तापमान -200 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे चला जाता है। ऐसे में वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यहाँ बर्फ के रूप में अब भी पानी हो सकता है। भारत के 2008 के चन्द्रयान-1 मिशन ने चन्द्रमा की सतह पर पानी होने का संकेत दिया था। अंत में चन्द्रयान-3 की सफलता के लिए मैं ये कविता चन्द्रयान-3 मिशन के वैज्ञानिकों को समर्पित करता हूँ:-

चन्द्र धरातल छू गया, जब भारत का यान,
कीर्तिमान नव रच गया, “इसरो” का अभियान।

वैज्ञानिक इस देश के, अभिनंदन के योग्य,
और शीर्ष नेतृत्व भी, दृढ़, साहसी, सुयोग्य।

भारत है भारत सदा, अन्वेषण कर नित्य,
ज्ञान और विज्ञान का, धरती पर आदित्य।



जी-20 शिखर सम्मेलन और भारत



श्री.श्रीराम
स.लेप.अ.

दुनिया तेज़ी से बदल रही है साथ ही विश्व की अर्थव्यवस्था भी उसी तेज़ी के साथ बदल रही है इस उथल-पुथल भरे दौर में करवट लेती वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ कदम बढ़ाना अपरिहार्य है। इससे सामंजस्य बिठाना और साथ ही विकास के मानदंडों को बनाए रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे माहौल में विकसित और विकासशील देशों के बीच आपसी संवाद और बेहतर तालमेल होना बेहद अहम है और यही वज़ह है कि G-20 जैसे एक वैश्विक आर्थिक मंच की परिकल्पना की गई। सितंबर 1999 में अस्तित्व में आने के बाद अब G-20 विश्व का सबसे शक्तिशाली आर्थिक मंच बन गया है। यह एक ऐसा मंच है जो विविधता और संपूर्णता में विश्वास रखता है। इस बार शिखर सम्मेलन अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स में संपन्न हुआ। भारत की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। 1997 के एक बड़े एशियन वित्तीय संकट के बाद यह निर्णय लिया गया था कि दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को एकजुट होना चाहिये। इसकी स्थापना 1999 में सात देशों अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान, फ्रांस और इटली के विदेश मंत्रियों ने की थी। G-20 का उद्देश्य वैश्विक वित्त को प्रबंधित करना तथा पर्यावरण के सतत् विकास भी G-20 में शामिल किया गया है। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद इन देशों के प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों की बैठक शुरू हुई। UN, IMF और विश्व बैंक के स्टाफ स्थायी होते हैं तथा इनके हेड क्वार्टर भी होते हैं, इस वैश्विक अर्थव्यवस्था में वित्तीय मार्केट, टैक्स, राजकोषीय नीति, आर्थिक भगोड़ों से संबंधित मुद्दे शामिल हैं। इसके अलावा कृषि, रोजगार तथा ऊर्जा संबंधी विषय भी शामिल हैं। इस समूह का दुनिया की 85 प्रतिशत अर्थव्यवस्था और 75 प्रतिशत व्यापार पर नियंत्रण है।

उद्देश्य

G-20 का गठन सदस्य देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय नीति में सहयोग, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार, वैश्विक वित्तीय संकट को टालने के उपाय, सदस्य देशों के आर्थिक विकास और सतत् विकास को बढ़ावा देने के मकसद से किया गया। इस संगठन का घोषित लक्ष्य

विकसित और विकासशील देशों को एक मंच पर लाना और दुनिया के आर्थिक मुद्दों पर आम राय बनाने की कोशिश करना है।

G-20 शिखर सम्मेलन के मुख्य मुद्दे

G-20 का 13वाँ शिखर सम्मेलन कई मायने में खास है। इस सम्मेलन के दौरान इस समूह के नेताओं द्वारा 10 साल पहले अस्तित्व में आए G-20 के कार्यों की समीक्षा के साथ ही आने वाले दशक की नई चुनौतियों से निपटने के तरीके और समाधान पर भी चर्चा की गई। इस बार के जी-20 शिखर सम्मेलन की थीम सम्मेलन की थीम 'न्यायपूर्ण और सतत् विकास के लिये आम सहमति' है। इस दौरान G-20 शिखर सम्मेलन में जुटे देशों के नेताओं द्वारा वैश्विक अर्थव्यवस्था, श्रम बाजारों के भविष्य और लिंग समानता के मुद्दे पर भी चर्चा की गई। इसके अलावा इस बार के एजेंडे में मैक्रो इकोनॉमिक पॉलिसी, डिजिटल अर्थव्यवस्था, विश्व व्यापार संगठन में सुधार, वित्तीय विनियमन, कराधान और व्यापार के मुद्दे भी शामिल हैं। इसके साथ ही सम्मेलन का मुख्य फोकस भविष्य के विकास के लिये आधारभूत संरचना और खाद्य सुरक्षा पर है। 2008 में जब G-20 के बारे में परिकल्पना की गई थी उस वक्त विश्व आर्थिक संकट से गुजर रहा था क्योंकि अमेरिका की आर्थिक स्थिति खराब थी और उसे बेहतर बनाने के लिये G-20 के सारे नेताओं ने जो फॉर्मवर्क अपनाया उसमें 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट फॉर आल' मुख्य एजेंडा था।

भारत के मुख्य मुद्दे

सम्मेलन के दौरान इसके सदस्य देशों को जलवायु परिवर्तन और असमानता से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से निपटने के लिये साहसिक कदम उठाने का संदेश दिया गया है। अगर भारत की बात करें तो भारत शुरू से ही G-20 के सभी सम्मेलनों में प्रमुखता से शामिल रहा है। इस बार के शिखर सम्मेलन में भारत के प्रमुख मुद्दों में तेल की कीमतों में स्थिरता, आंतकी फंडिंग को रोकने और धन शोधन का मुद्दा शामिल है। इसके अलावा विश्व व्यापार संगठन में सुधार का मुद्दा भी भारत के एजेंडे में शामिल है। भारत चाहता है कि G-20 केवल व्यापार का मुद्दा नहीं रहे, चाहे यह दो देशों के बीच हो या अन्य देशों के बीच। विश्व बैंक द्वारा पिछले महीने जारी ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस की सूची में भारत के 23 अंकों के छलांग के साथ 77वें पायदान पर आने से दुनिया की नज़रें भारत पर टिकी हुई हैं। पिछले साल भी टी-20 देशों ने भारत के सतत् और समावेशी विकास के लिये उठाए जा रहे कदमों और वैश्विक अर्थव्यवस्था हेतु भारत के योगदान को अहम बताया था। वैश्विक अर्थव्यवस्था, टिकाऊ विकास, जलवायु परिवर्तन और

भगोड़ा आर्थिक अपराधियों पर कार्यवाही कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे पूरी दुनिया का हित जुड़ा हुआ है। भारत का मानना है कि इन मुद्दों पर सदस्य देशों के बीच सहयोग बढ़ना चाहिये।

G-20 शिखर सम्मेलन: प्रमुख बिंदु

जी-20 यूरोपीय संघ और दुनिया की 19 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का समूह है। इसके सदस्य दुनिया के सबसे ताकतवर और सबसे समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं।

दो दिन के इस सम्मेलन की शुरुआत 09-10 सितंबर को हुई, इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ब्रिटेन की प्रधानमंत्री थेरेसा मे, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, फ्रांस के राष्ट्रपति एमेलुल मैक्रान, जर्मनी की चांसलर एंजिला मार्केल, कनाडा के प्रधानमंत्री जास्टिन ट्रुदो, जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे के साथ मेज़बान देश अर्जेंटीना के राष्ट्रपति मॅरिशियो मैक्री ने हिस्सा लिया।

- भारत ने इस वैश्विक मंच से एक बार फिर सुरक्षा और आतंकवाद का जो मुद्दा उठाया है, वह भारत की चिंता को रेखांकित करता है।
- भारत के लिये आतंकवाद का मुद्दा गंभीर इसलिये है क्योंकि लंबे समय से भारत पड़ोसी देश पाकिस्तान की ओर से सीमापार आतंकवाद की मार झेल रहा है। पाकिस्तान भारत के कश्मीर और पंजाब में किस तरह आतंक फैला रहा है तथा कश्मीर को लेकर भारत के खिलाफ दुनिया में दुष्प्रचार करता रहा है, यह किसी से छिपा नहीं है। ऐसे में वैश्विक मंच से आतंकवाद के खिलाफ भारत की चिंता जायज़ है।
- भारत ने संयुक्त राष्ट्र के आतंकवाद रोधी ढाँचे को मज़बूत बनाने पर बल दिया है, ताकि आतंकियों को हथियारों की खरीद के लिये पहुँचाए जाने वाले पैसे पर रोक लगाई जा सके।
- एक बड़ी उपलब्धि यह भी रही कि शिखर सम्मेलन से अलग भारत, रूस और चीन के नेताओं की एक साथ वार्ता हुई, जिसमें बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली और मुक्त अर्थव्यवस्था पर चर्चा की गई।
- जलवायु संकट के मुद्दे पर भारत ने पुरजोर तरीके से अपना पक्ष रखा, जो बड़े देशों के नेताओं के लिये यह स्पष्ट संदेश है कि अगर जलवायु संकट के लिये वे दुनिया के छोटे और गरीब मुल्कों को दोषी ठहराते रहेंगे तो यह संकट हल होने की बजाय और बढ़ेगा।

भारत के लिये यह सम्मेलन इस कारण से भी महत्वपूर्ण रहा है कि 2022 में जी-20 की बैठक की मेजबानी उसके हिस्से में आई है।

भारत के 9 सूत्रीय एजेंडे पर सहमति

भगोड़े आर्थिक अपराधियों पर शिकंजा कसने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कायम करने की कवायद में भारत को ठोस सफलता मिली है। G-20 की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पेश की गई 9 सूत्रीय कार्यवाही योजना को लेकर सदस्य देशों के बीच सहमति बनी है।

ये हैं-

भगोड़े आर्थिक अपराधियों से संयुक्त रूप से निपटने के लिये G-20 देशों के बीच प्रभावी और सक्रिय सहयोग प्रक्रिया हेतु प्लेटफॉर्म बने। ऐसे अपराधियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही और उनके जल्द प्रत्यर्पण के लिये सदस्य देशों के बीच सहयोग।

- ✓ G-20 देशों को ऐसा ढाँचागत तंत्र बनाना चाहिये जिससे भगोड़े आर्थिक अपराधियों का एक-दूसरे के देश में प्रवेश रोका जा सके। कोई देश उनके लिये सुरक्षित पनाहगाह न बने।
- ✓ भ्रष्टाचार के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के संबंध में संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांत प्रभावी तरीके से लागू हों। अंतर्राष्ट्रीय फाइनेंसियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) के जरिये ऐसी प्रणाली बने जिससे संबंधित संस्थाओं और वित्तीय खुफिया इकाइयों (फाइनेंसियल इंटेलिजेंस यूनिट) के बीच सही समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान हो सके। G-20 की कुछ उपलब्धियाँ
- ✓ जी-20 कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे- वित्तीय स्थिरता बोर्ड, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन से सलाह लेता है।

इस शिखर वार्ता में नेताओं ने विश्वास जताया कि बाज़ार मुक्त व्यापार और निवेश प्रणालियों से परिपूर्ण हो। विनियमित वित्तीय बाज़ार, गतिशीलता, नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देते हैं। इसके जरिये आर्थिक विकास, रोजगार में बढ़ोतरी के साथ-साथ गरीबी हटाने में भी काफी मदद मिलेगी। इसमें कर, वित्तीय लेनदेन, जलवायु परिवर्तन, व्यापार और विकास के मुद्दे भी जुड़ गए हैं। इन सभी मुद्दों पर बातचीत की जा रही है।

G-20 में अफ्रीका महाद्वीप से दक्षिण अफ्रीका शामिल है तो उत्तरी अमेरिका की ओर से कनाडा, मेक्सिको और संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण अमेरिका की ओर से अर्जेंटीना और ब्राज़ील जैसे देश शामिल हैं।

पूर्व एशिया से तीन देश चीन, जापान और दक्षिण कोरिया हैं। दक्षिण एशिया से इंडोनेशिया और मध्य पूर्व एशिया से तीन देश यानी चीन, जापान और दक्षिण कोरिया हैं। दक्षिण एशिया से भारत इसका प्रतिनिधित्व करता है। दक्षिण-पूर्व एशिया से इंडोनेशिया और मध्य-पूर्व एशिया से सऊदी अरब शामिल हैं। यूरेशिया से रूस और टर्की के अलावा यूरोप से यूरोपीय संघ, फ़्रांस, जर्मनी, इटली और ब्रिटेन इसके सदस्य हैं। ओशियानिया से आस्ट्रेलिया शामिल है।

निष्कर्ष

वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल के बीच संपन्न हुई G-20 समूह की शिखर बैठक से निकले नतीजे भारत के लिहाज़ से सकारात्मक हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के संरक्षणवाद और अमेरिका-चीन ट्रेड वॉर के अलावा आर्थिक प्रतिबंध, तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, यूरोपीय संघ की मुश्किलें, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अशांति तथा गहराती शरणार्थी समस्या जैसी चुनौतियों के मद्देनज़र इस सम्मेलन पर दुनिया भर की निगाहें टिकी हुई थीं। हालाँकि इसमें भाग ले रहे राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों द्वारा कोई ऐसी बड़ी घोषणा नहीं की गई है जिसके आधार पर तात्कालिक तौर पर किसी नतीजे पर पहुँचा जा सके किंतु जो समझौते हुए हैं तथा एकजुटता बढ़ी है, उससे भविष्य में बेहतरी की उम्मीदें ज़रूर बढ़ी हैं। दुनिया के प्रति-दिन बदलते माहौल में आर्थिक विकास के लिये विकासशील देशों के बीच आपसी संवाद और तालमेल बेहद अहम है। इस प्रकार तमाम देश आपसी सहयोग और समझदारी से न सिर्फ वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं बल्कि खुद को भी आर्थिक तौर पर मज़बूत बना सकते हैं।



जीवन एक किताब



श्री. आर. श्रीनिवास प्रभु
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी हर किसी के लिए
एक अलिखित पुस्तक के रूप में सामना कर रहा है।
केवल कुछ ही लोग
अपना नाम उस पर लिखते हैं।
शेष व्यक्ति अन्त तक अलिखित ही रह जाते हैं।
जीवन कुछ के लिए है
अनिर्मित पुस्तक के ढीले पन्नों जैसे
अनाथ के रूप में अकेले खड़ा कर देता है।
जीवन कुछ के लिए है
बिना पेज नंबर वाली किताबें देखकर
बूढ़ी महिलाओं की तरह स्थिर कर देती है।
जीवन कुछ के लिए
प्रस्तुत है लघुकथाओं का दिलचस्प संग्रह।
जिंदगी दूसरों के लिए
एक महँगी अप्राप्य पुस्तक के लिए लालायित करता है।
जिंदगी कुछ लोगों के लिए है,
डाह करना तरीके से
यह उच्च गुणवत्ता वाले कागज पर छपी पुस्तक है।
जिंदगी चंद लोगों के लिए है,
एक सुन्दर शीर्षक देता है और आँख मारता है।
कुछ लोगों की जिंदगी की किताबें
एक सुरक्षित कार्ट्रिज कवर से ढकें
आपको निडर बनाता है।
जिंदगी कुछ लोगों की किताबें
इसे रोमांच से भरे एक रहस्यमय उपन्यास में बदल देता है
जिंदगी कुछ लोगों के सपनों को शब्दों में ढालकर

पन्ने भरने का वरदान देता है।
कुछ लोगों की जिंदगी की किताबों के कवर को आकर्षक बनाते,
हाथ में पकड़कर पढ़ना असंभव करके हँसती है।
जिंदगी कुछ लोगों की किताब है जो हमेशा उनकी हथेलियों में रहती है।
सुहाना मौसम जैसे रखने के लिए कहती है।
जिंदगी ने कुछ लोगों को धर्मग्रंथों के बराबर बनाकर
नमन करने पर मजबूर कर देता है।
जीवन कुछ के लिए केवल कुछ के लिए
मन और प्रेम को पवित्र तरीके से खोलकर दिखाती हैं।



इंतजार



श्री.आर. श्रीनिवास प्रभु
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आँखों में सपने इंतजार कर रहे
वे महत्वाकांक्षाएं बन जाते हैं।
मन में इंतजार कर रहे विचार
शब्द बन जाते हैं।
जो टकराव पर इंतजार कर रही गर्मी
आग बन जाती है।
नींद में इंतजार कर रही ख्वाहिशें
सपने बन जाते हैं।
यात्रा में इंतजार कर रहे उत्साह
अनुभव बन जाते हैं।
नृत्य में प्रतीक्षारत आंदोलनों
नाजुक हो जाता है।
वह वृक्ष जो बीज के भीतर प्रतीक्षा करता है
यह जंगल बन जाता है।
दृष्टि जो पत्थरों के भीतर प्रतीक्षा करती है
वे मूर्तियां बन जाती हैं।
पानी की एक बूंद सीप में इंतजार कर रही है
वह चुम्बनें बन जाती है।
कोयले का एक टुकड़ा ज़मीन में इंतजार कर रहे है
वह हीरा बन जाता है।
मनुष्य के भीतर प्रतीक्षा कर रही बुद्धि
जागरूकता को उपहार देता है।

द्रौपदी संवाद



श्री अविनाश कुंदन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जो एक स्त्री के वस्त्र हीन होने पर हसीं ठिठोली कर रहे थे।
उन्हे अपना अस्त्रहीन होना आज अनुचित लग रहा है।।
न्याय की बात करने लगे हो अंगराज।
जो जीत जाते स्वयंवर द्रौपदी का।
तो क्या दान नहीं दे देते उसे दुर्योधन को।।
ये जानते थे कृष्ण।
इसीलिए तुम्हारा अपमान आवश्यक था।।
सूत पुत्र तो तुम कभी थे भी नहीं।
और अन्याय केवल तुम्हारे हिस्से नहीं आया था।।
अगर दानवीर कहलाना था तो
दे देते अपना अंगप्रदेश दुर्योधन को
और कहते इस दान की मित्रता
स्वीकार्य नहीं है।
कर देते मुक्त अपनी आत्मा को
जो गिरवी रख आए थे तुम अपने
राज्याभिषेक में ।
क्या तुम्हें अपने राजा होने पर गर्व का अनुभव नहीं हुआ था।
क्या राजा का शोक और शोषण में तुम आनंदित नहीं हुए थे।।

क्या अपने राज्याभिषेक के बाद कितने सूत पुत्रों को
स्वाभिमान से जीना सिखाया था।
एक भी नहीं।
तुम तो दुर्योधन की चाकरी में लग गए
और भूल गए की कर्म तुम्हारा क्या है।
तो फिर आज अपने अस्त्रहीन होने पर इतनी ग्लानि क्यों है।
आज जब कृष्ण अर्जुन के साथ है
तो इतनी परेशानी क्यों है।
क्या कर्म, नियत, और व्यवहार का कोई मोल नहीं।
पांडव ने तो खांडवप्रस्थ को इंद्रप्रस्थ बनाया था।।
अगर तुम सक्षम थे तो तुम भी किसी मरुभूमि के
राजा बन जाते।
किंतु तुमने भिक्षा स्वीकार की वो भी दुर्योधन की।।
वो जो तुम निभा रहे थे वो मित्रता नहीं
वो तुम्हारी मजबूरी थी।।
हर बार खुद को अन्याय की बाट में डाल कर
अपने कुकर्मों से कैसे पीछे हटोगे अंगराज।
एक पवित्र स्त्री को वैश्या कहने में नहीं चुके थे तुम
यह जानते थे कृष्ण
तो आज अपने अस्त्रहीन होने का गम ना मनाओ
जाओ हे! सर्व श्रेष्ठ धनुर्धर, दानवीर कर्ण
जाओ तुम्हें ये अन्याय भरी मृत्यु मुबारक हो।।

जीवन का रहस्य



श्रीमती वी राधा
सहायक पर्यवेक्षक

यह क्या जिंदगी है....

कभी जन्म कभी मृत्यु,
कभी आशा कभी निराशा,
कभी स्वस्थ कभी अस्वस्थ,
कभी मिठास कभी खटास,

यह क्या जिंदगी है.....?

कभी दोस्ती कभी दुश्मनी,
कभी खुशी कभी गम
कभी मोहब्बत कभी नफरत,
कभी शादी कभी तलाक।

जिंदगी दो पहलू वाले सिक्के की तरह है,
जो इम सत्य को अपनाएगा,
वह सुखी जीवन जीएगा,
यही जीवन का रहस्य है।

यह क्या जिंदगी है.....?

कभी तरक्की कभी गिरावट,
कभी अमीर कभी गरीब,
कभी प्रशंसा कभी निंदा,
कभी विजय कभी पराजय।

यह क्या जिंदगी है.....?

कभी तसल्ली कभी आंदोलन,
कभी इनाम कभी जुर्माना,
कभी प्रकाश कभी अंधेरा,
कभी आभारी कभी कृतघ्न।

हमने वक्त को बदलते देखा है।



श्री संजीव कुमार गिरी
डी ई ओ

वक्त वक्त की बात है, हमने वक्त को बदलते देखा है,
बच्चों को बड़े और बड़े को बूढ़े होते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
अपने को अपनों के लिए बदलते देखा है
अपनों को अपने से बदलते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
जरूरत के हिसाब से लोगों को बदलते देखा है
मूड के हिसाब से रिश्तों को बदलते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
बचपन के मासूमियत को बड़ों के लाइ के लिए बदलते देखा है,
दोस्तों के साथ के लिए भाई-बहन के हाथ को छोड़ते देखा है,
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
सोशल मिडिया पर दोस्तों के साथ बात करने के लिए
परिवार के साथ की शाम को छोड़ते देखा है,
दोस्तों की लिस्ट बड़ी बनाने के चक्कर में
सच्चे दोस्तों को छोड़ते देखा है,
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
रंग-रूप के पीछे भागते हुए
सच्ची मोहब्बत को ठूकराते देखा है
खुद की कहानी बनाने के चक्कर में
दूसरों की कहानी चुराते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
हमने सुबह को शाम में, शाम को रात में
और रात को एक नई सुबह में बदलते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
नये रिश्तों के लिए पुराने रिश्तों को बदलते देखा है
कुछ लोगों को रिश्तों को संभाले रखने के लिए बदलते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,

हमने पहली सांस को आते देखा है
हमने आखरी सांस को जाते देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है,
हमने खुशी की मुस्कराहट को देखा है
हमने गम को छुपाते हुए मुस्कराहट को देखा है
हमने वक्त को बदलते देखा है, हमने सब कुछ बदलते देखा है।



अति की चाह



श्री जितेन्द्र कु. जायसवाल
कनिष्ठ अनुवादक

ईश्वर की भक्ति छोड़कर, लोलुपता का रोग,
कितना जमा करेगा, कितना करेगा उपभोग।

पीपल की बराबरी की बातें करने लगें हैं,
कुछ गमलों में उगने वाले ये अज्ञानी लोग।

जीवन भर संपत्ति जुटाए धरा के सबलोग,
कभी नहीं सोच पाए कि कितना है उपयोग।

मरने लगे तो आँखे मूँद दीं गयी इनकी यहाँ,
शायद और नहीं देखने देना चाहते थे, लोग।

परोपकारिता छोड़कर धन-संचय का रोग,
बर्बाद न कर दे उसको, उसी का यह प्रयोग।

यहाँ जो होना है, हो ही जाएगा एक दिन तो,
लेकिन ऊपर भी बैठेगा एक जाँच-आयोग।



संघर्ष ही जीवन है



श्री पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

“जो मुस्कुरा रहा है उसे दर्द ने पाला होगा, जो चल रहा है उसके पाँव में छाला होगा, बिना संघर्ष के इंसान चमक नहीं सकता, जो जलेगा उसी दिए में उजाला होगा। “

संघर्ष क्यों बचे संघर्ष से, संघर्ष ही तो जीवन की आत्मा है जितना कठिन संघर्ष होगा उतनी ही शानदार जीत होगी।

एक बार एक किसान भगवान से बहुत ही नाराज हो गया। किसान बहुत मेहनती था, बहुत मेहनत से वह खेतों में अनाज उगाता, उसकी देखभाल करता पर अक्सर उसकी फसल खराब हो जाती। कभी सूखा पड़ जाता कभी बाढ़ आ जाती, कभी धूप तेज तो कभी आँधी, कोई न कोई कारण बन ही जाता था कि उसकी फसल खराब हो जाती।

एक दिन वह किसान गुस्से में आसमान की ओर देखकर भगवान से कहा कि हे ईश्वर आपको लोग सर्वज्ञाता मानते हैं, मानते हैं कि आप सब जानते हैं। कहते हैं कि आपके इच्छा के बिना एक भी पत्ता नहीं हिलता पर मुझे तो लगता है कि आप छोटी से छोटी बात भी नहीं जानते। आपको तो ये भी नहीं पता की खेती-बाड़ी कैसे करते हैं? अगर आप जानते होते तो हर समय जो बाढ़, आँधी और तुफान आते हैं वो कभी नहीं आते। आप नहीं जानते कि कितना नुकसान उठाना पड़ता है हम किसानों को। यदि आप मेरे हाथ में यह शक्ति दे दे कि जैसा मैं चाहूँ वैसा मौसम कर दूँ फिर आप देखना मैं अन्न के भंडार लगा दूँगा।

भगवान इस किसान के तीखे वाक्य सुनकर मुस्कुरा रहे थे और वह किसान के सामने प्रकट होकर बोले – “मैं आज से तुझे यह शक्ति देता हूँ कि तुम अपनी खेतों पर तुम्हारी जैसी इच्छा हो, वैसा ही मौसम कर दोगे। मैं बिल्कुल भी दखल नहीं दूँगा, तुम्हारी इच्छा से सब कुछ होगा।” किसान बहुत खुश हो गया।

किसान ने गेहूँ की फसल अपनी खेतों में बोए। जब उसे लगा कि खेतों में धूप चाहिए तो खेतों को धूप मिले, जब पानी बरसना चाहिए तो पानी बरसे। आँधी, तुफान, बाढ़ कुछ भी उसने अपने खेतों पर आने नहीं दिया। किसान के खेत में इस वर्ष ऐसी फसल हुई जैसी पहले कभी नहीं हुई थी।

हरी-भरी लहलहाती फसल मन ही मन वह बहुत खुश हो गया और सोचने लगा अब सबूत के साथ दिखाऊँगा भगवान को कि इसे कहते हैं शक्ति का सही उपयोग। मेरी सफलता देखकर उन्हें अपनी

नियम जरूर बदलना पड़ेगा। कुछ दिन गुजरे फसल काटने को तैयार हो गए। किसान बहुत उत्सुकता के साथ फसल को काटने लगा पर जैसे ही उसकी नजर गेहूँ की बालियों पर गया तो उसने सिर पिट लिया और वह रोने-चिल्लाने लगा।

गेहूँ की एक भी बाली के अंदर गेहूँ का दाना नहीं था। सारी बालियाँ अंदर से खाली थीं। किसान बहुत दुःखी हो गया उसने भगवान को रोते हुए फिर पुकारा – “हे प्रभु आपने ये मेरे साथ क्या किया, क्या आपने मुझे कोई सजा दी”, भगवान बोले – “पुत्र ये तो होना ही था तुमने पौधों को संघर्ष करने का मौका ही कहाँ दिया। ना तुमने पौधों को आँधी से जूझने दिया ना तेज बारिश को सहने दिया और ना ही धूप में तपने दिया। एक भी चुनौती का सामना तुमने उन्हें नहीं करने दिया, इसलिए सारे पौधे अंदर से खोखले रह गए।

जब आँधी, तूफान, तेज बारिश और धूप पड़ती है तभी ये पौधे अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करता है और इसी संघर्ष से एक बल पैदा होती है जिसमें शक्ति होती है, ऊर्जा होती है और यही ऊर्जा पूर्ति तेरे गेहूँ के दानों की तरह जो नहीं फूटी। तुमने उन्हें कठिन परिस्थितियों से गुजरने ही नहीं दिया, जहाँ उनके अस्तित्व का जन्म होता। सारे बालियाँ इसलिए खाली हैं, इसमें एक भी गेहूँ का दाना इसलिए नहीं है, क्योंकि तुमने अपने पौधों को संघर्ष ही नहीं करने दिया।

याद रखिए स्वर्ण में सवर्णीय आघात तभी आते हैं जब वह आग में तपने, गलने और हथोड़े से पीटने जैसी संघर्षों से गुजरता है। कोयला का टुकड़ा हीरा तभी बनता है, जब वह उच्च दाब और उच्च ताप की मुश्किल परिस्थितियों से गुजरता है। इसी तरह यदि हमारी जिंदगी में कोई संघर्ष ही ना हो, कोई चुनौती ही ना हो तो हम भी गेहूँ की बालियों की तरह खोखले रह जाएंगे। कोई अस्तित्व नहीं होगा हमारा।

विपरीत परिस्थितियाँ, चुनौतियाँ, समस्याएँ हमें और अधिक निखारती हैं। यदि जीवन में कठिन परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ आए तो घबराना मत बल्कि सामना करना। विश्वास करना की आप और अधिक निखर जाओगे और अधिक मजबूत बन जाओगे।

किसी ने कितना सही कहा है:-

“जिंदगी जीना आसान नहीं होता, बिना संघर्ष कोई महान नहीं होता।
जब तक ना पड़े हथौड़े की चोट तब तक पत्थर भी भगवान नहीं होता।।”



टिफिन का डिब्बा



श्रीमती आर श्रीविद्या
व.लेप.अ.

घर से काम पर जाते समय या स्कूल, कॉलेज निकलने के वक्त यह आवाज सुनाई देता है – टिफिन ले लिया। ऐसा क्या है जो इसका महत्व अलग होता है, इसकी अलग से पहचान होती है। हर किसी के, कुछ सुखद यादें भी दिलाती है।

हर घर में रोज सुबह, टिफिन का डिब्बा तैयार करने में परिवार के सदस्य लगे रहते हैं। कोई उसकी सफाई करता, कोई खाना पकाता, कोई खाना डिब्बा में भरता, कोई बैग में रखता। उम्र के हिसाब से टिफिन तैयार होता है और उसमें खाना भी।

टिफिन के डिब्बे में माँ/बीबी/बहन/पापा/भैया/दादी/नानी/दादा/नाना या जो भी घर में इसको तैयार करता है, उनका प्यार प्रत्यक्ष होता है। देख-देख कर तैयारी करते हैं कि जब डिब्बा खुलकर खाने से उनकी मुख में मुसकान हो, उनका पेट भरे और उनकी स्वास्थय अच्छी रहे। इससे अनेक अनेक अभिलाषाएं प्रकट होती हैं।

हर व्यक्ति का पसंद अलग रहता है। डिब्बे में खाना भी उनकी पसंद से होती है। डिब्बे की आकार, गिनती, सामग्री भी चुन-चुन कर लेते हैं। बच्चे तो पहले दिन ही कहते हैं कि कल मुझे यह चाहिए, इतना चाहिए। जो चीज घर में ना हो, उसे रात को ही खरीदा जाता है। बच्चे ज्यादातर, दोस्तों की खाने के जैसे माँगते हैं। आजकल मिडिया में इतना है कि बच्चों के मन में छा जाता है।

बच्चे जब स्कूल में डिब्बा खोलते हैं, मन पसंद खाना देखकर, फूले नहीं समाते। लेकिन नापसंद खाना हो तो, उनका मुख देखा नहीं जाता। अच्छा खाना दोस्तों को देकर गर्व करते हैं और खुशी-खुशी अपने दोस्तों के डिब्बे से खाते हैं। अगल-अलग घर का खाना, मानो 'बुफे' हो। बच्चे ज्यादातर दोस्तों को खाना देते हैं। पर न पसंदीदा खाना हो तो, थोड़ा हिचकिचाते हैं। बच्चे तो बच्चे, दिल के सच्चे।

बड़ों की बात करे तो, डिब्बे के खाना से घर का हालात/स्थिति/मूड मालूम करते हैं। बढ़िया खाना करे हो तो, सब ठीक, खुशी। अन्यथा, कुछ तो है जिसकी परवाह करना चाहिए।

जब घर में ही कभी डिब्बा छोड़ जाते हैं तो परेशानी दोनों को होती है पकाने वाले और खाने वाले। जब पूरा खाकर, डिब्बा खाली होती है, तो माँ/बीबी अपने परिश्रम को सफल मानकर खुश होती हैं।

टिफिन का डिब्बा खरीदने से लेकर, उपयोग करने में, विशेष ध्यान दिया जाता है। किसी किसी को डिब्बा से इतना लगाव होता है कि बड़े होने पर, पुराने होने पर भी उसी में खाना पसंद करते हैं।

समय के अनुसार, टिफिन के डिब्बे की सामग्री भी बदल रही है। पहले ताँबा, पीतल का उपयोग हुआ करता था। बाद में स्टेनलेस स्टील का समय रहा। आजकल प्लास्टिक का फेशन चल रहा है।

दोपहर के समय, किसी भी स्कूल, ऑफिस, कारखाना, कॉलेज इत्यादि जगह पर जाए तो, खाने वाले की खुले टिफिन की डिब्बा से कई खुशबु, हमारे ध्यान को अवश्य खींच लेती है। कभी-कभी भूख न होने पर भी खाने को मन करता है।



मानवता



श्रीमती आर श्रीविद्या
व.लेप.अ.

मानवता एक बहुत ऊँचा आदर्श है। जिसकी पूर्ति मानव-जीवन की वास्तविक सार्थकता है। मानवता विश्वबन्धुत्व की भावना है और सभ्यता का प्रतीक। उसके बिना सभ्यता और सांस्कृतिक विकास संभव ही नहीं होता। मानवता, मनुष्य को सात्विकता तथा नैतिकता की ओर ले जाती है। वह मनुष्य को सचमुच मनुष्य बनाती है।

मानवता ही मनुष्यता का सच्ची परिभाषा है। मानवता एक ऐसी विशेषता है, जो मनुष्य को बाकी जीव से अलग बनाती है। मानवता ही ऐसा भाव है जो मनुष्य को दूसरों के हित में कार्य करने की प्रेरणा देता है।

मानवता की झलक इन कार्यों में प्रतीत होता है जैसे:

- *असहाय, दीन दुःखी लोगों की मदद।
- *आपातकाल में काम आना।
- *भूखे को खाना खिलाना, प्यासे को पानी देना।
- *अंधे व्यक्ति को सड़क पार कराना, मदद करना।
- *दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद करना।
- *दान देना, मानवता का सबसे बड़ा संकेत है।
- *लोगों के बुरे समय पर मदद करना।
- *छोटी-बड़ी मुश्किलों में हाथ देना।
- *वातावरण का संरक्षण करना।
- *जरूरत के समय में मदद के लिए हाथ देना।

जब पूरा विश्व कोविड महामारी से झेल रही थी, मानवता ने ही हमें जिन्दा रखा है। हमारे देश ने दूसरे देशों को दवाई, वैक्सीन और अनाज, इत्यादि देकर मदद किया है। भारतवर्ष को हमेशा सम्मान पूर्वक देखा जाता है क्योंकि आपातकाल में भारत सभी देशों की मदद करता है।

मानवता, मनुष्य होने की पहचान है। मानव में मानवता की स्पर्श रहना जरूरी है। मानवता को इंसानियत या मनुष्यता भी कहते हैं। मानव में करुणा, सहिष्णुता, भाईचारा, दया, प्रेम जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है। मानवता के विकास में इन मानवीय गुणों की भूमिका अहम होती है। मनुष्य

होने के नाते मानवता सभी के दिलों में है, परंतु उसे जागरूक करना आवश्यक है। इंसानियत से बड़ा रिश्ता नहीं है, उसे निभाना है। मानवता के विकास के लिए मानवाधिकारों की रक्षा अनिवार्य है।

संसार में हर व्यक्ति सर्वप्रथम सिर्फ अपने बारे में सोचता है। परिवार, दोस्त, समाज, पर्यावरण सब बाद में है।

आज के इस दौर में मनुष्य, समाज, जाति, धर्म, वर्ग, रंग-रूप एवं प्रान्तों के आधार पर बंट गया है। स्वार्थ की भावना मनुष्य में इस कदर घर कर गई है कि मनुष्य सिर्फ अपने ही बारे में सोचता है। अपने वास्तविक धर्म, मानवता को पूर्णतः भूल रहा है।

प्रतिदिन अखबार, टीवी, मीडिया सब में हिंसा की घटनाओं से भरा पड़ा है। मानव इतना स्वार्थी बन चुका है कि उसे अपने बच्चे, माता-पिता, भाई-बहन, परिवार, समाज, वातावरण किसी की कोई परवाह नहीं। हिंसा की घटनाओं ने कई रूप ले लिए हैं, जिसे हम कभी सोच भी नहीं सकते थे।

सरकार अनेक नियम, कानून बना रही है जिससे पीड़ित लोगों को राहत मिल सके जैसे – पोसको, सीनियर सिटीजन एक्ट, घरेलु हिंसा कानून, ह्यूमन राइट एक्ट इत्यादि। आजकल मनुष्य में संवेदनहीनता और मानवीयता की कमी देखी गयी है। उसे आने वाली अपनी पीढ़ी का भी कोई चिंता नहीं है। हर साल 19 अगस्त को विश्व मानवता दिवस मनाया जाता है।

ईश्वर ने आपको इंसान बनाया है ताकि इंसानियत हमेशा जिंदा रहे। इंसानियत निभाना हर व्यक्ति का सबसे बड़ा धर्म है। इंसान, इंसानियत के बिना इंसान नहीं, मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं। मानव सभ्यता और संस्कृति की सार्थकता इसी में है कि संसार भर के लोग सुख, शांति और प्रेम के साथ रहे। इंसान तो हर घर में पैदा होते हैं, बस इंसानियत कहीं कहीं जन्म लेती है। मानवता सर्वोपरि है हमें इस गुण को अपने जीवन में लागू करने के साथ अपनी आदतों में भी शामिल करना चाहिए।

पृथ्वी पर जीवित सभी जीवों में सबसे सर्वश्रेष्ठ और उत्तम प्रजाति मानव को ही माना जाता है और इसी कारण से हमारा यह दायित्व बनता है कि हम मानव जाति के साथ-साथ अन्य जीवों की मदद करें और उन्हें भी उनका जीवन जीने में सहायता करें।



चुटकुले



श्रीमती वी राधा
सहायक पर्यवेक्षक

मास्टर: देखो बच्चों, विदेश में 15 साल के
बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं....

तुरंत एक छात्र : मास्टर जी, हमारे देश में एक साल का
बच्चा भागने भी लगता है।



पति(किताब पढ़ते हुए) : “एक लेखक ने लिखा है कि
पतियो को भी बोलने की आजादी
होनी चाहिए।“

पत्नी(हंसते हुए): देखो जी, लेखक भी बेचारा
लिख ही पाया, बोल नहीं पाया।



टीचर: बच्चों, आज की ऑनलाइन क्लास में
किसी को कोई डाउट है तो पूछ लो....

गीता: मैडम, जो कंधे पर पोंछा रखकर,
बीच में चाय देने आए थे, वो आपके
पति हैं क्या?

टीचर: गीता, यह डाउट है तुमको...? शरारती लड़की...!

जी हाँ, मेरा पति है।

गीता: अब पता चला मैडम, आपको मेकअप

करने के लिए समय कैसे मिलता है।



स्कूल के पीछे नदी में प्रिंसिपल डूब रहे थे-

एक छात्र ने ये देखा तो चिल्लाते हुए स्कूल की तरफ भागा-

“कल छुट्टी है... छुट्टी है...!”



वकील: हत्या की रात तुम्हारे पति के साथ हुआ अंतिम बातचीत क्या था?

पत्नी : मेरा चश्मा कहाँ है संगीता?

वकील : तो इसमें मारने वाली क्या बात थी?

पत्नी : मेरा नाम रंजना है।

पूरा कोर्ट खामोश!!!!



पड़ोसन : नेता जी, आपका बेटा फेल हो गया है,

फिर भी आप लड्डू खिला रहे हो?

नेता जी: देखिये रमा जी, 80 लड़कों की कक्षा में 50 फेल हैं.....

बहुमत तो मेरे बेटे के साथ है ना....

पड़ोसन: हे भगवान...! क्या दुनिया है....!

पहेलियाँ



श्रीमती वी राधा
सहायक पर्यवेक्षक

1. चार है रानियाँ
और एक है राजा,
हर एक काम में
इनका अपना साझा.....।
2. मैं एक बक्सा हूँ,
जिसमें बिना ताले की
चाबियां होती है,
फिर भी मेरी चाबियां
आपकी गहरी इंद्रियों को
खोल सकती हैं।
मैं कौन हूँ....?
3. जो कितनी भी चले
सुबह से रात तक,
मगर कभी थकती नहीं।
बताओ क्या है.....?
4. लिखता हूँ पर कलम नहीं,
चलता हूँ पर गाड़ी नहीं,
टिक-टिक करता हूँ पर घड़ी नहीं।
मैं कौन हूँ?
5. जो गूंगा, बहरा और अंधा है,
पर बोलता हमेशा सच।
बताओ वह क्या है.....?

6. हरी हरी मछली के
हरे हरे अंडे...
बताओ क्या है....?

उत्तर:

1. अंगूठा और अंगुलियाँ
2. पियानो
3. जीभ
4. टाइपराइटर
5. दर्पण
6. मटर की फली



आधुनिक युग में विचलित मानव



श्री गिरीश कुमार
लेखा-परीक्षक

मनुष्य का पृथ्वी पर आना एक प्रकार से भगवान की अद्भुत रचना है। यहां के विभिन्न प्राणियों में वह सर्वश्रेष्ठ है। आधुनिक युग में उसने अपने सुख सुविधा के लिए ऐसा वातावरण तैयार कर लिया है जिसका वह आनंद उठा सकता है। हर वो चीज पा सकता है जिसकी उसको लालसा है। लेकिन फिर भी वह अपने ही बनाए गई व्यवस्था/ नियमों/ कानूनों में क्यों फंसता जा रहा है। सम परिस्थितियाँ होते हुए भी वह क्षण भर भी सुकून के पल नहीं गुजार पाता।

सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य का आचरण, उसके ऐच्छिक कर्म या उसके द्वारा अपनाये गए मापदंड व्यक्त करते हैं कि वह अपना मार्गदर्शन कैसे करता है। माना कि रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की आवश्यकता है परन्तु इसकी लालसा में मनुष्य द्वारा किया जानेवाले प्रत्येक कृत्य एवं सामाजिक गतिविधियाँ अन्य लोगों के जीवन में गहरी छाप छोड़ जाता है। आगे निकलने की होड़ में वह सुख-शांति, सभी रिश्ते नातो को पीछे छोड़कर जाता है। वह जीवन भर इन्हीं गतिविधियों में लगा रहता है और फिर अंत में सोचता है कि उसने जीवन में क्या पाया? आज मनुष्य का मनुष्य से लगाव महज नाम मात्र का रह गया है। क्या सही है क्या गलत उसको यह भलीभाँति ज्ञान भी रहता है। फिर भी उसको ऐसा लगता है कि उसके द्वारा किया गया कर्म उचित है बाकी सब अनुचित।

आत्मा व्यक्ति के शरीर में मन के द्वारा गुंथी हुई है और मन की वृत्ति को बुद्धि के द्वारा समझ पाना आत्मज्ञान है। लेकिन आज का आदमी भ्रमित जीवन जी रहा है। वह यही समझ नहीं पा रहा कि जो सुख शाश्वत नहीं है, उसके पीछे मृग-मरीचिका की तरह क्यों भागे जा रहा है? धन-दौलत, जर, जमीन, जायदाद कब रहे हैं इस संसार में शाश्वत? पर आदमी मान बैठा कि सब कुछ मेरे साथ ही जाने वाला है। उसको नहीं मालूम कि पूरी दुनिया पर विजय पाने वाला सिकन्दर भी मौत के बाद अपने साथ कुछ नहीं लेकर गया, खाली हाथ ही गया था। फिर क्यों वह परिग्रह, मूर्खा, आसक्ति, तेरे-मेरे के चक्रव्यूह से निकल नहीं पाता और स्वार्थी के दल-दल में फंसकर कई जन्म खो देता है।

चाह सुख-शांति की, राह कामना-लालसाओं की, कैसे मिले सुख-शांति? क्या धधकते अंगारों की शैल्या पर या खटमलभरे खाट पर सुख की मीठी नींद आ सकती है? क्या कभी इच्छाओं का मुख भरा जा सकता है? सुख-शांति का एकमात्र उपाय है- इच्छा विराम या इच्छाओं का नियंत्रण। जिसने इच्छाओं पर नियंत्रण करने का थोड़ा भी प्रयत्न किया, वह सुख के नंदन वन को पा गया।

आकांक्षाएं-कामनाएं वह दीमक है, जो सुखी और शांतिपूर्ण जीवन को खोखला कर देती है। आकर्षक-लुभावने विज्ञापनों के प्रलोभनों में फंसा तथा लिविंग स्टैंडर्ड जीवनस्तर के नाम की आड़ में आदमी ढेर सारी अनावश्यक वस्तुओं को चाहने लगता है जिनका न कहीं ओर है न छोर। एक समय में कुछ ही चीजों में इंसान संतोष कर लेता था, पर आज? ...हर वस्तु को पाने की हर इंसान में होड़-सी लगी हुई है। बेतहाशा होड़ की अंधी दौड़ में आदमी इस कदर भागा जा रहा है कि न कहीं पूर्ण विराम है, न अर्धविराम।

विपुल पदार्थ, विविध वैज्ञानिक सुविधाओं के बावजूद आज का इच्छा-पुरुष अशांत, क्लान्त, दिग्भ्रान्त और तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। और भोग रहा है- बेचैनी से उत्पन्न प्राणलेवा बीमारियों की पीड़ा। भगवान महावीर का जीवन-दर्शन हमारे लिए आदर्श है, क्योंकि उन्होंने अपने अनुभव से यह जाना कि सोया हुआ आदमी संसार को सिर्फ भोगता है, देखता नहीं जबकि जागा हुआ आदमी संसार को भोगता नहीं, सिर्फ देखता है। भोगने और देखने की जीवनशैली ही महावीर की संपूर्ण जिंदगी का व्याख्या सूत्र है। और यही व्याख्या सूत्र जन-जन की जीवनशैली बने, तभी आदमी समस्याओं से मुक्ति पाकर सुखी और शांतिपूर्ण जीवन का आनंद पा सकता है।

जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है संयम और मन की शांति क्योंकि यदि मन शांत होगा तब आप हर समस्या का आसानी से हल ढूंढ सकते हैं तथा बड़ी से बड़ी गलती करने से बच सकते हैं इसलिए कबीर दास ने कहा - कि गोधन, गजधन, वारि- धन और रतनधन खान, जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान। हर व्यक्ति सुखी एवं शांतिपूर्ण जीवन की चाह रखता है, लेकिन उसके प्रयास अपनी इस इच्छा के अनुरूप नहीं होते। यह एक सत्य है कि शरीर में जितने रोम होते हैं, उनसे भी अधिक होती हैं- इच्छाएं। ये इच्छाएं सागर की उछलती-मचलती तरंगों के समान होती हैं। अनियंत्रित कामनाएं आदमी को भयंकर विपदाओं में डाल देती हैं। मानव को प्रतिक्षण बेचैन, तनावग्रस्त, बड़ी बीमारियों का उत्पादन केंद्र बनता देखा जा सकता है। वह विपुल आकांक्षाओं में इस कदर उलझ जाता है कि निकलने का मार्ग ही नहीं सूझता। वह परिवार से कट जाता है, स्नेहिल रिश्तों के रस को नीरस कर देता है।

समस्याएं जीवन का अभिन्न अंग हैं जिसका अंत कभी नहीं हो सकता। एक समस्या जाती है तो दूसरी आ जाती है। यह जीवन की प्राकृतिक चक्रीय प्रक्रिया है। वर्तमान युग में

कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे किसी प्रकार की समस्या न हो। आप घर के स्वामी हैं, समाज एवं संस्था के संचालक हैं या किसी भी जनसमूह के प्रबंधक हैं एवं व्यवस्थापक हैं तो आपके सामने कठिनाइयों का आना अनिवार्य है। व्यक्ति चाहे अकेला हो या पारिवारिक, समस्याएं सभी के साथ आती हैं तो सारी समस्याओं का समाधान है- अटल धैर्य। धैर्य के बल पर ही हमें समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है।

हमें इस तथ्य एवं सच्चाई को मानना होगा कि जीवन में सदैव उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जीवन में ऐसी घटनाएं घट जाती हैं जिनकी हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते लेकिन हमें किसी भी अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना धैर्य एवं संतुलन नहीं खोना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि जीवन के प्रति हमारा नजरिया भोगवादी न होकर संयममय हो। जीवन तंत्र, समाज तंत्र व राष्ट्रतंत्र चलाने में 'अर्थ' व 'पदार्थ' अवश्य सार्थक भूमिका निभाते हैं, पर जब अर्थ व पदार्थ मन-मस्तिष्क पर हावी हो जाते हैं, तब सारे तंत्र फेल हो जाते हैं। अर्थ व पदार्थ जीवन निर्वाह के साधन मात्र हैं, साध्य नहीं। गलती तब होती है, जब उन्हें साध्य मान लिया जाता है।

मानव हम दो में सिमटता, सिकुड़ता जा रहा है फलतः मानवीय संबंध बुरी तरह से प्रभावित हो बिखर रहे हैं, परिवार टूट रहे हैं, स्नेहिल संबंधों में दरारें पड़ रही हैं। 'हम पिया-हमारा बैल पिया' का मनोभाव भारतीय संस्कृति के मूलभूत सिद्धांत- सदाचार, सद्भाव, शांति व समता, समरसता को खत्म करने पर तुले हुए हैं। मनुष्य स्वभावतः कामना बहुल होता है। एक लालसा-कामना अनेक लालसाओं की जननी बनती है जबकि 6 फुट जमीन शायद यही होती है- वास्तविक आवश्यकता। यही है कामनाओं की अंधी दौड़ का पूर्ण विराम। सुकरात का सुवचन है- 'ज्यों-ज्यों व्यक्ति इच्छाओं को कम करता है, देवताओं के समकक्ष हो जाता है। सुख, शांति और स्वास्थ्य का उपहार पा लेता है।'

बदलती जीवन शैली में स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है। यदि हम प्रातः भ्रमण, योगा व मेडिटेशन का जीवन में समावेश करें तो हमारा स्वास्थ्य अच्छा हो पाएगा। शरीर में अनेक शक्तियाँ निहित हैं, यदि हम उन शक्तियों को पहचान लेंगे तो हम हर पीड़ा/ कष्ट से दूर रह पाएंगे। जीवन की सभी संभावनाओं, कामनाओं, आकांक्षाओं से लेकर आत्मस्वरूप की प्राप्ति तक सभी कार्य पुरुषार्थ द्वारा ही सम्भव होते हैं। मनुष्य जन्म मिलने के बाद पुरुषार्थ की साधना द्वारा जीवन को संवारा और गढ़ा जा सकता है। जीवन के समस्त कार्य भाग्य और पुरुषार्थ के अधीन रहते हैं।

मनुष्य के जीवन की सफलता उसके कर्मों पर निर्भर करती है। उसके कर्म, ज्ञान, संकल्प, साहस तथा आचरण पर निर्भर करते हैं। अपने आपको जाने बिना व्यक्ति को अपनी

क्षमता का आभास नहीं हो सकता। यही वह आत्म-तत्त्व है जिसका विवेचन कर मनुष्य विश्वास के साथ अपने जीवन का निर्देशन करता है। सभी प्राणियों में से मनुष्य की यह विशेषता होती है कि वह अपने विवेक का प्रयोग कर जीवन की एक धारा निर्धारित कर सकता है; सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है। स्वयं की शक्तियों को पहचानने का ज्ञान ही तो जीवन-दर्शन का तत्व है, जिसको आत्म-तत्त्व भी कहते हैं। यही वह ज्ञान है जो हमें अपनी शक्तियों को समाज के कार्यों में लगाने की प्रेरणा देता है। ज्ञानेंद्रियां मन के अधीन होती हैं और मन बुद्धि के। बुद्धि का संबंध आत्मा से है जो बुद्धि को संयत रहने के लिए प्रेरित करती है। यह आत्मा ही परमात्मा का अंश है। आत्मा का विकास होने पर वह महान-आत्मा [महात्मा] तथा महान से ऊपर उठने पर वह परम [परमात्मा] तक हो जाती है।



स्त्री उत्थान: समाज के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम



श्रीमती डी.साईश्री
पर्यवेक्षक

प्राचीन काल से लेकर आज तक, समाज में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्त्री उत्थान समाज के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है और आजकल खासतौर से महिलाओं की सशक्तिकरण के विषय में चर्चा हो रही है। स्त्रियों को समाज में सम्मान और समानता के साथ सम्मिलित करने का प्रयास समाज के निर्माण में एक बड़ा योगदान होगा।

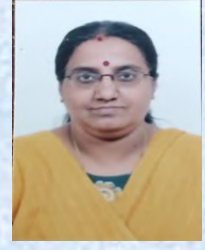
स्त्रियों को शिक्षित करने और समान अवसर प्रदान करने से समाज में उनके सामाजिक और आर्थिक विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। स्त्रियों को आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए सरकार और समाज को उचित योजनाएं बनानी चाहिए। महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्त होना उनके पूरे भविष्य को तय करता है।

स्त्री उत्थान के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण रूप से दोहरा जा सकता है। शिक्षित महिलाएं समाज में अपनी जगह बना सकती हैं और आगे बढ़कर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकती हैं। शिक्षित महिलाएं अपने परिवार और समाज के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभा सकती हैं। महिलाएं आजकल हर क्षेत्र में अपनी क्षमता दिखा रही हैं, चाहे वो सरकारी नौकरी हो या शिक्षा क्षेत्र हो या खेल या व्यवसाय हो स्त्रियां अपना परचम लहरा रही हैं।

स्त्री उत्थान के लिए एक और महत्वपूर्ण पहलू है समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों से निपटना। समाज में स्त्रियों पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए सख्त कानूनी प्रावधानों को लागू करना और उन्हें उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए न्याय की उचित व्यवस्था प्रदान करना भी आवश्यक है। अपनी उन्नति और विकास के लिए महिला को उन समस्त विधिक आयामों से अवगत होना चाहिए जो उसे शोषण से मुक्ति दिलाने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए योग्य बनाते हैं।



ग्लोबल वार्मिंग



श्रीमती वी.एम.बिंदु
स.लेप.अ.

ग्लोबल वार्मिंग एक ऐसा शब्द है जिससे लगभग हर कोई परिचित है। लेकिन, इसका अर्थ अभी भी हम में से अधिकांश के लिए स्पष्ट नहीं है। ग्लोबल वार्मिंग, पृथ्वी के औसत तापमान में होने वाली बढ़ोतरी को कहा जाता है। विभिन्न गतिविधियां हो रही हैं जो धीरे-धीरे तापमान को बढ़ाती हैं। इसके कारण हिमखंड तेजी से पिघल रहे हैं। यह धरती के साथ-साथ इंसानों के लिए भी बेहद हानिकारक है। ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करना काफी चुनौतीपूर्ण है। लेकिन आगे के नुकसान को रोकना संभव है। किसी भी समस्या को हल करने में पहला कदम समस्या के कारण की पहचान करना है। इसलिए, हमें पहले ग्लोबल वार्मिंग के कारणों को समझने की आवश्यकता है जो हमें इसे हल करने में मदद करेंगे।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण

ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर समस्या बन गई है जिस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। यह किसी एक कारण से नहीं बल्कि कई कारणों से हो रहा है। ये कारण प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों हैं। प्राकृतिक कारणों में ग्रीनहाउस गैसों की रिहाई शामिल है जो पृथ्वी से बाहर निकलने में सक्षम नहीं हैं, जिससे तापमान में वृद्धि होती है।

इसके अलावा, ज्वालामुखी विस्फोट भी ग्लोबल वार्मिंग का एक कारण है। इस विस्फोट से निकलने वाली गैसों वायु प्रदूषण का कारण बन सकती हैं। इसी तरह, मीथेन भी ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार एक बड़ा मुद्दा है।

उसके बाद, ऑटोमोबाइल और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त खनन जैसी गतिविधियाँ पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक हैं। सबसे आम मुद्दों में से एक है वनों की कटाई।

जब कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण के सबसे बड़े स्रोतों में से एक ही गायब हो जाएगा, तब गैस को विनियमित करने के लिए कुछ भी नहीं रहेगा। ग्लोबल वार्मिंग को रोकने और धरती को फिर से बेहतर बनाने के लिए तुरंत कदम उठाए जाने चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर परिणामों को दूर करने की दिशा में अधिक से अधिक पेड़ लगाना पहला कदम हो सकता है।

भारत - मधुमेह की राजधानी



श्री वी. सविता
पर्यवेक्षक

पूरी दुनिया में मधुमेह रोग हर दिन बढ़ती जा रही है। अभी भारत मधुमेह रोग में प्रथम स्थान पर है। हर दस में से एक व्यक्ति मधुमेह से पीड़ित है और हर पाँच में से एक मधुमेह रोग के बारे में जागरूक भी नहीं है।

मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जिसमें रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है। यह इंसुलिन की कमी के कारण होता है जो अग्न्याशय द्वारा निर्मित होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि मधुमेह बीमारी को कैसे रोका जाए और कैसे उसका प्रबंधन करें? मधुमेह रोग का प्रबंधन करना मुश्किल या नामुमकिन नहीं है। मधुमेह रोगी को किसी भी प्रकार के चीनी और मिठाई का सेवन नहीं करना चाहिए। इसलिए हमारे देश में जो चाय और कॉफी के बहुत शौकीन हैं, वह सावधान रहें और बिना चीनी के चाय और कॉफी पीएं। रोज फल और सब्जियाँ खाना ज़रूरी है क्योंकि फाइबर के गुण इनमें अधिक हैं जो हमारे खून में चीनी को धीरे-धीरे कम करने में मदद करती हैं। सेब, संतरा, अमरूद, पपीता और रहिला जैसे फल खा सकते हैं और फल को सलाद की तरह बनाकर खाएँ और उसके रस बनाकर पीना मना है। हर रोज सुबह और रात में टिफिन खाएँ और दोपहर चावल और सब्जी खाएँ। रोज 30-40 मिनट तक पैदल चलना भी सेहत के लिए काफी अच्छा है। इस तरह जीलनशैली में छोटे-मोटे बदलाव लाकर हम सब मिलकर मधुमेह रोग को कम कर सकते हैं।



घमण्ड - प्रेरक प्रसंग



श्री संजीव कुमार गिरी
डी.ई.ओ

एक राज्य के राजा ने अपने बढ़ते उम्र को देखकर, यह फैसला किया कि वह राज-पाठ से सन्यास ले लेगा। परन्तु उसका कोई पुत्र नहीं था जिसे वह राज्य सौंप कर जिम्मेदारी से मुक्त होता। राजा की एक पुत्री थी जिसकी विवाह की चिंता भी राजा को बनी रहती थी।

इसलिए उसने मंत्रियों को बुलवाया और कहा कि कल प्रातः जो भी व्यक्ति सबसे पहले इस नगर में प्रवेश करेगा उसे यहाँ का राजा नियुक्त किया जाएगा, और मेरी पुत्री का विवाह भी उसी के साथ कर दिया जाएगा।

अतः अगले दिन राज्य के सैनिकों ने फटेहाल कपड़े पहने एक युवक को ले आये क्योंकि वही व्यक्ति सबसे पहले नगर द्वार में प्रवेश किया था और उसका राज्य अभिषेक किया गया। राजा अपनी पुत्री का विवाह उस युवक के साथ करके, जिम्मेदारियों को सौंप कर स्वयं वन प्रस्थान कर गए।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और उस युवक ने राज्य की बागडोर संभाल ली और एक अच्छे राजा की तरह राज्य की सेवा में लग गया। उस महल में एक छोटी सी कोठरी थी, जिसकी चाबी राजा हमेशा अपने कमर में लटकाये रखता था। सप्ताह में एक बार वह उस कोठरी में जाता, आधा या एक घंटा अंदर रहता और बाहर निकल कर पुनः बड़ा सा ताला उस कोठरी में लगा देता था, और अपने अन्य कार्यों में लग जाता।

इस तरह राजा के बार-बार उस कमरे में जाने से सेनापति को अचम्भा होता कि राज्य का सारा खजाना, सारे रत्न, मणि, हीरे, जवाहरात तो खजांची के पास है। सेना की शस्त्रागार की चाबी मेरे पास है और अन्य बहुमूल्य कागजातों की चाबी मंत्री के पास है। फिर इस छोटे से कोठरी में ऐसा क्या है, जो राजा यहां हर सप्ताह अंदर जाता है। और थोड़ी देर बाद बाहर निकल आता है। सेनापति से रहा नहीं गया उसने हिम्मत करके राजा से पूछा की राजन, क्षमा करें - यदि आप यह बताइये कि उस कमरे में एसी कौन सी वस्तु है, जिसकी सुरक्षा की आपको इतनी फ़िक्र है।

राजा गुस्से से बोले सेनापति, यह तुम्हारे पूछने का विषय नहीं है, यह प्रश्न दोबारा कभी मत करना। अब तो सेनापति का शक और भी बढ़ गया, धीरे-धीरे मंत्री और सभासदों ने भी राजा से पूछने का प्रयास किया परन्तु राजा ने किसी को भी उस कमरे का रहस्य नहीं बताया।

बात महारानी तक पहुंच गयी और हम तो जानते हैं कि स्त्री हट के आगे किसी की भी नहीं चलती, रानी ने खाना-पीना त्याग दिया और उस कोठरी की सच्चाई जानने की जिद करने लगी। आखिरकार विवश होकर राजा सेनापति व अन्य सभासदों को लेकर कोठरी के पास गया और दरवाजा

खोला, जब कमरे का दरवाजा खुला तो अंदर कुछ भी नहीं था सिवाय एक फटे कपड़े के जो दीवार की खूँटी पे लटका था।

राजा ने उस फटे कपड़े को अपने हाथ में लेते हुए उदास स्वर में कहा कि यही तो है मेरा सब कुछ, जब भी मुझे थोड़ा सा भी अहंकार आता है, तो मैं यहाँ आकर इन कपड़ों को देख लिया करता हूँ।

मुझे याद आ जाता है कि जब मैं इस राज्य में आया था तो इस फटे कपड़े के अलावा मेरे पास कुछ भी नहीं था। तब मेरा मन शांत हो जाता है और मेरा घमण्ड समाप्त हो जाता है, तब मैं वापस बाहर आ जाता हूँ।



दस छोटी-छोटी आदतें



श्री दीपक कुमार,
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

कई वर्षों से हमने कई अलग-अलग सकारात्मक आदतें अपनाई हैं। एक आदत तभी सकारात्मक होती है जब वह हमारे जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाती है। ऐसी ही 10 आदतें नीचे दी गई हैं जिनका आपके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा -

1. सप्ताह में 3 बार वजन के साथ पूरे शरीर की कसरत करें

शक्ति प्रशिक्षण के कई फायदे हैं। यह हड्डियों के स्वास्थ्य, मांसपेशियों की रक्षा करता है, आपको दुबला रखता है, ऊर्जा के स्तर को बढ़ाता है और चोटों से बचाता है। आदर्श रूप से, आप अपनी सभी मांसपेशियों को सप्ताह में 3 बार प्रशिक्षित कर सकते हैं। यह सरल, व्यावहारिक है और यह काम करता है।

2 3-4 . दैनिक प्राथमिकताएँ निर्धारित करें

यह सर्वोत्तम उत्पादकता रणनीतियों में से एक है। हम सभी जानते हैं कि फोकस ही हमें परिणाम देता है। कोई फोकस नहीं? कोई परिणाम नहीं। इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट रहें कि आप हर दिन, सप्ताह और वर्ष में क्या हासिल करना चाहते हैं। नियमित रूप से जो मायने रखता है उस पर ध्यान केंद्रित करने की आदत बनाएं। हर दिन, 3-4 आवश्यक (और छोटे) कार्यों पर काम करें जो आपको आपके साप्ताहिक और वार्षिक लक्ष्यों के करीब लाएंगे।

3. प्रतिदिन 60 मिनट पढ़ें

पढ़ना आपके संज्ञान के लिए आवश्यक है। पढ़ना आपको एक बेहतर विचारक और लेखक भी बनाएगा। जीवन में कई चीजें हैं जो हमें पसंद नहीं हैं, लेकिन फिर भी हम उन्हें करते हैं। अपने आप से यह कहने के बजाय कि आपको पढ़ना पसंद नहीं है, इसे हर दिन करके इसका आनंद लेना सीखें और जादू की तरह, एक दिन आपको पढ़ना अच्छा लगेगा।

4. रात में 7-8 घंटे सोयें

किसी भी चीज के लिए अपनी नींद का त्याग न करें। रात में 7-8 घंटे की नींद लें। कुछ लोग 5 घंटे की नींद से भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। लेकिन हममें से अधिकांश को और अधिक की आवश्यकता है। इसलिए सुनिश्चित करें कि आपको पर्याप्त नींद मिले और इसके बारे में पूरी तरह से गंभीर रहें।

5. प्रतिदिन 30 मिनट टहलें

यदि आप रोजाना टहलने के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं, तो आप अपने जीवन पर नियंत्रण नहीं रखते हैं। निश्चित रूप से, पैदल चलने से शरीर गतिशील रहता है और यह आपके लिए अच्छा है। जब आप बाहर घूमते हैं, तो आप दुनिया के साथ एक होने के लिए मजबूर हो जाते

हैं। यह आपकी इंद्रियों को तीव्र करता है। आप अकेले या किसी और के साथ जा सकते हैं। आपकी अच्छी बातचीत हो सकती है या आप बस परिवेश का आनंद ले सकते हैं।

6. आंतरायिक उपवास खाने के पैटर्न का पालन करें

रात के खाने के बाद हम कुछ नहीं खाते और अगर हम नाश्ता छोड़ देते हैं, इसका मतलब है कि हम हर दिन 15-16 घंटे का उपवास करते हैं। आंतरायिक उपवास से स्वास्थ्य संबंधी लाभ जुड़े हुए हैं। सुनिश्चित करें कि आप अपने शरीर को संचालित करने के लिए आवश्यक कैलोरी का उपभोग करते हैं (महिलाओं के लिए 2000, पुरुषों के लिए 2500, औसतन)।

7. उपस्थित रहें

हम अपने लक्ष्यों पर इतने केंद्रित हैं कि हम वर्तमान क्षण का आनंद लेना भूल जाते हैं। यह हमारे सबसे बड़े नुकसानों में से एक है। हमें वास्तव में हर दिन खुद को याद दिलाने की जरूरत है कि हमें अभी का आनंद लेना चाहिए। यदि आप हमेशा भविष्य में फंसे रहेंगे तो आप वर्तमान का आनंद नहीं ले पाएंगे। एक ट्रिगर ढूंढें जो आपको वर्तमान क्षण में वापस लाता है।

8. दया और प्रेम का अभ्यास करें

हम सभी अपने प्यार के साथ ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि यह एक खत्म होने वाला संसाधन हो। यह झूठ है, प्यार असीमित है और कभी खत्म नहीं होता। आप इसे जितना चाहें उतना दे सकते हैं। लेकिन आपका अहंकार आपको ऐसा करने से रोकता है। आप हमेशा बदले में कुछ न कुछ चाहते हैं। तो इस आदत को आजमाएं। समझें कि आपके पास असीमित संसाधन हैं। हर दिन अपना कुछ प्यार और दयालुता दें। स्कोर बनाए रखने के बारे में चिंता न करें, वैसे भी आपके पास काफी प्यार है।

9. प्रतिदिन 30 मिनट जर्नल बनाएं या लिखें

हमें हर दिन अपने विचारों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। हम ऐसा करने के लिए कोई भी तरीका अपना सकते हैं जिससे मुझे उस चीज पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिले जो मेरे लिए मायने रखती है। एक बेहतर विचारक और इंसान बनने के लिए जर्नलिंग (दैनिक लेखन) भी एक उत्कृष्ट उपकरण है।

10. अपनी आय का 30% बचाएं

यदि आप 30% नहीं बचा सकते, तो 10% बचाएं। बचत इस बारे में नहीं है कि कितनी, बल्कि यह है कि कितनी बार बचत करें। आप दैनिक या साप्ताहिक रूप से किए जाने वाले बेकार कार्यों में कटौती करके बचत करते हैं। आपको हर दिन 10 रुपये में एक "ऑर्गेनिक" काजू खरीदने की जरूरत नहीं है। छोटी-छोटी चीजों पर बचत करें। समय के साथ वे नकदी के बड़े ढेर में बदल जाएंगे। विशेषकर यदि आप उस अतिरिक्त नकदी का निवेश करते हैं। साथ ही, इन 10 आदतों का रहस्य यह है कि ये सभी छोटी हैं और आपकी दैनिक प्रगति नगण्य लगती है। आप केवल समय के साथ अपने जीवन पर इसका प्रतिफल देखेंगे। जब तक आपका जीवन बेहतर नहीं हो जाता तब तक आपको इन आदतों पर कायम रहना चाहिए। और जब ऐसा होगा, तो आप चलते रहेंगे। इसलिए नहीं कि आपको करना है, बल्कि इसलिए कि आप चाहते हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरदार वल्लभभाई पटेल का योगदान



श्रीमती. नाहिन अब्दुल सत्तार
स.लेप.अ.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक महत्वपूर्ण युद्ध था जिसमें अनगिनत महान व्यक्तियों ने अपने जीवन का समर्पण किया और देश को आज़ादी दिलाने के लिए संघर्ष किया। इस संघर्ष में सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने महत्वपूर्ण योगदान से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नाडियाद गाँव में हुआ था। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्रोत और आदर्श रहे हैं। उन्हें लौह पुरुष के रूप में भी जाना जाता है जिन्होंने भारतीय विभाजन के समय भारतीय राज्यों को एकत्र करने के लिए अपने योगदान से अपने आप को साबित किया।

सरदार वल्लभभाई पटेल और महात्मा गाँधी की दोस्ती और सहयोग का उदाहरण स्वतंत्रता संग्राम के दौरान साक्षात्कार होता है। वे एक दूसरे के सजीव और विश्वासी साथी थे जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मार्गदर्शन करने में सामर्थ्यशाली थे।

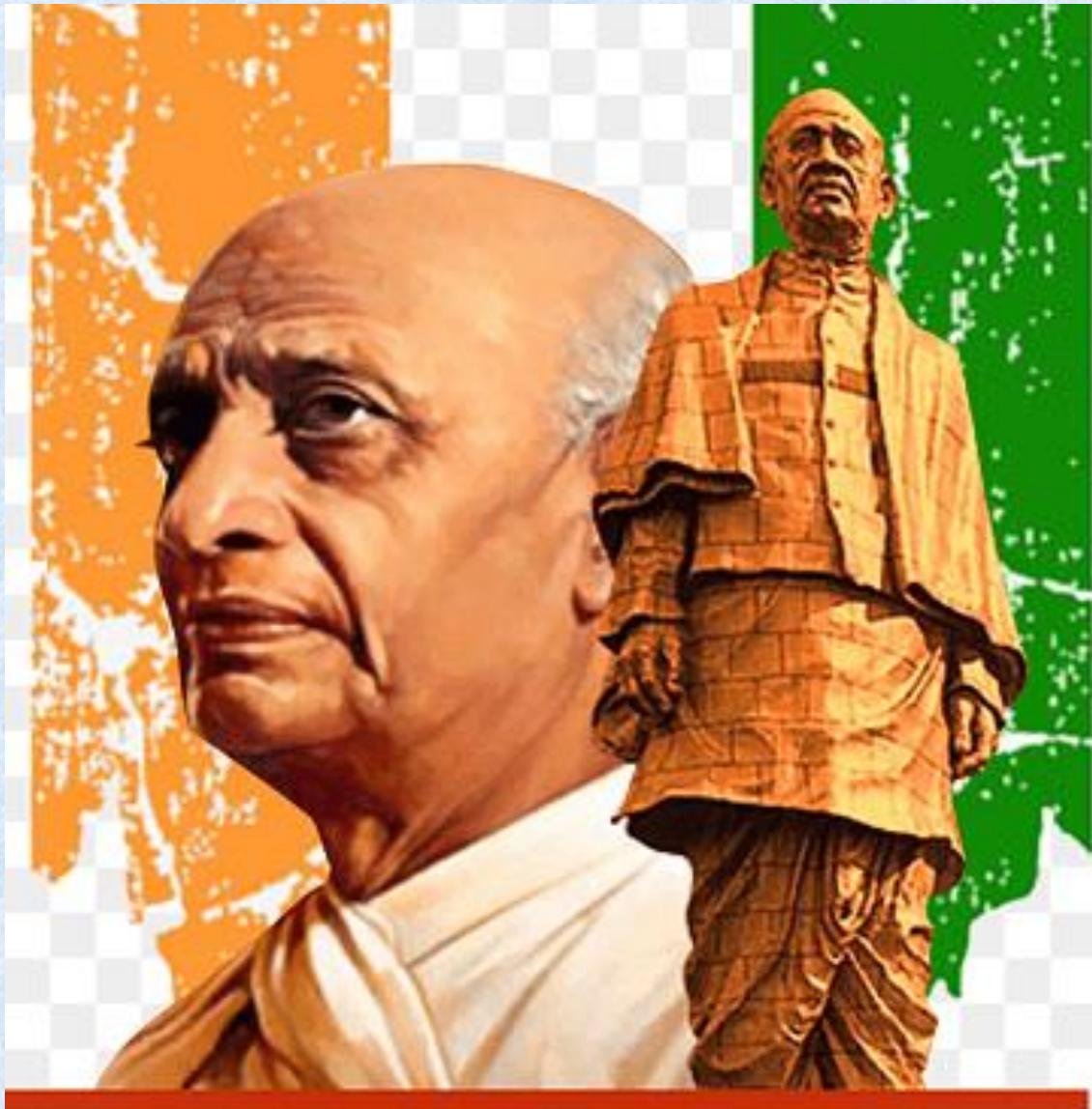
सरदार पटेल ने सत्याग्रह और अन्य प्रमुख आंदोलनों के माध्यम से आक्रमणकारियों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने नमक सत्याग्रह आंदोलन के माध्यम से अंग्रेज साम्राज्य के खिलाफ सशक्त प्रतिक्रिया प्रदान किया।

सरदार पटेल ने दलितों, आदिवासियों और अन्य असमान समाजी वर्गों के अधिकारों की रक्षा की और उन्हें समाज में समानता का माध्यम बनाने का प्रयास किया।

सरदार पटेल ने सैकड़ों छोटे बड़े राज्यों को मिलाकर भारतीय संघर्ष के पश्चात एक महत्वपूर्ण नागरिक निर्माण की यात्रा की। उन्हें "राष्ट्रीय एकता" के लिए भारतीय नागरिकों को जोड़ने का काम सौंपा गया और उन्होंने भारतीय संघर्ष के पश्चात एक मजबूत एकता का संवाददाता बनकर दिखाया।

सरदार पटेल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय देशभर में आज़ादी के लिए आवाज़ बुलंद की, उन्होंने भारतीय संघर्ष को सशक्त और सघन बनाने के लिए अपने जीवन का समर्पण किया और एक महान नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय अपने दृढ़ संकल्प, निष्ठा और समर्पण के साथ देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ा था। उनका योगदान देश के स्वतंत्रता संग्राम में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है और उनकी स्मृति हमें उनके योगदान की महत्वपूर्णता को याद दिलाती है। उन्होंने भारतीय समृद्धि और एकता की मार्गदर्शन की और उनके योगदान को देश हमेशा गर्व से याद करेगा।



एक युग का अंत होने जा रहा है



श्रीमती.वी. रुक्मणि
सहायक पर्यवेक्षक

आने वाले 10/15 सालों में एक पीढ़ी इस दुनिया से चली जायेगी। इस पीढ़ी के लोग बिल्कुल अलग हैं। जो लोग रात को जल्दी सोते हैं, जो सुबह जल्दी उठते हैं, जो सुबह टहलने के लिए निकलते हैं। वो जो आंगन और पौधों को सींचते हैं, वो जो भगवान की पूजा के लिए फूल तोड़ते हैं, वो जो पूजा करते हैं, वो जो रोज मंदिर जाते हैं। जो रास्ते में मिलने वालों से बात करते हैं, जो उनका सुख-दुख पूछते हैं, जो दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं, जो बिना पूजा के भोजन नहीं करते। पुराने फोन पर मोहित होना, फोन नंबर डायरी रखना, गलत नंबर से बात करना, दिन में दो से तीन बार अखबार पढ़ना। जो लोग हमेशा एकादशियों को याद रखते हैं, जो लोग अमावस्या और पूर्णमासी को याद रखते हैं, जो लोग भगवान में बहुत आस्था रखते हैं, जो लोग समाज से डरते हैं, जो लोग पुरानी चप्पल, बनियान, चश्मा पहनते हैं। जो लोग गर्मियों में अचार पापड़ बनाते हैं, जो घर का बना मसाला इस्तेमाल करते हैं और हमेशा स्थानीय टमाटर की तलाश में रहते हैं और वह भी कम से कम मात्रा में। क्या आप जानते हैं कि ये सभी लोग धीरे-धीरे हमें छोड़कर जा रहे हैं। क्या आपके घर में ऐसा कोई है? अगर हां तो उनका खूब ख्याल रखें। अन्यथा, एक महत्वपूर्ण सबक, उनके साथ चला जाएगा... वह है, एक संतोषजनक जीवन, एक सरल जीवन, एक प्रेरणा देने वाला जीवन, मिलावट और बनावट से रहित जीवन, एक जीवन जो धर्म के मार्ग पर चलता है और एक आध्यात्मिक जीवन जो सबकी परवाह करता है। आपके परिवार में जो बुजुर्ग हैं उन्हें सम्मान और स्नेह, समय और प्यार दें और हो सके तो उनके नक्शेकदम पर चलने की कोशिश करें, क्योंकि यही वह पीढ़ी है, जो खुश रहने की कला जानती है। अंततः... मानव इतिहास में यह आखिरी पीढ़ी है, जो अपने बड़ों की बात सुनती थी और अब अपने छोटों की बात सुन रही है। पुनश्च: कृपया इसे युवाओं के लाभ के लिए अपने पारिवारिक समूहों में साझा करें।



प्रकृति



श्री.एस. सुभाष चंदर
लेखापरीक्षक

प्रकृति में जीवित और निर्जीव घटक शामिल हैं जो मिलकर पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाते हैं। प्रकृति में कुछ रूपों को हरे-भरे जंगलों, हमारो ऊपर विशाल आकाश, अंतहीन समुद्र, ऊँचे खड़े पहाड़ों आदि के माध्यम से देखा जा सकता है। प्रकृति पौधों, जानवरों और मनुष्यों की समान रूप से जीवित रहने की जरूरतों को पूरा करती हैं। यग ऑक्सीजन, धूप, मिट्टी और पानी के आवश्यक घटक प्रदान करता है।

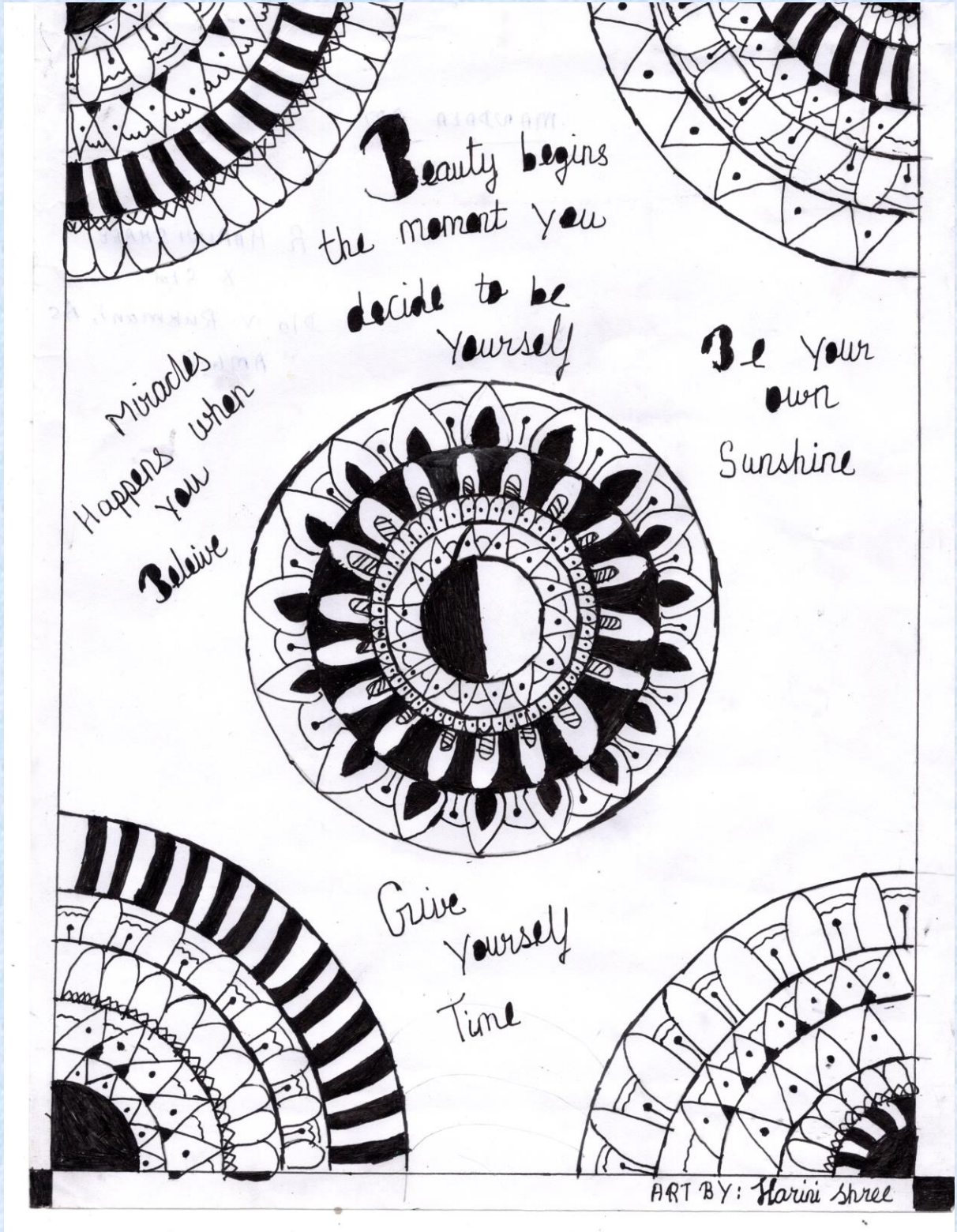
कई अन्य उत्पाद प्रकृति से अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होते हैं जिनमें लकड़ी, कागज, औषधीय जड़ी-बूटीयाँ, कपास, रेशम और विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ शामिल हैं। इन उत्पादों की मांग को पूरा करने के लिए मनुष्य अब पेड़ों की कटाई और प्रकृति के विनाश में लगा हुआ है।



कार्यालय के कर्मचारियों के बच्चों द्वारा की गई चित्रकारी



शिवन्या कश्यप
सुपुत्री- श्री दीपक कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



मंडाला आर्ट

आर. हरिणी श्री
सुपत्री- श्रीमती वी. रुक्मणि
सहायक पर्यवेक्षक



हिंदी दिवस 2022 के कार्यक्रम का आनंद उठाते कर्मचारीगण



पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते कर्मचारीगण

